



# राम की कहानी

संख्या १५ रु. ३.००



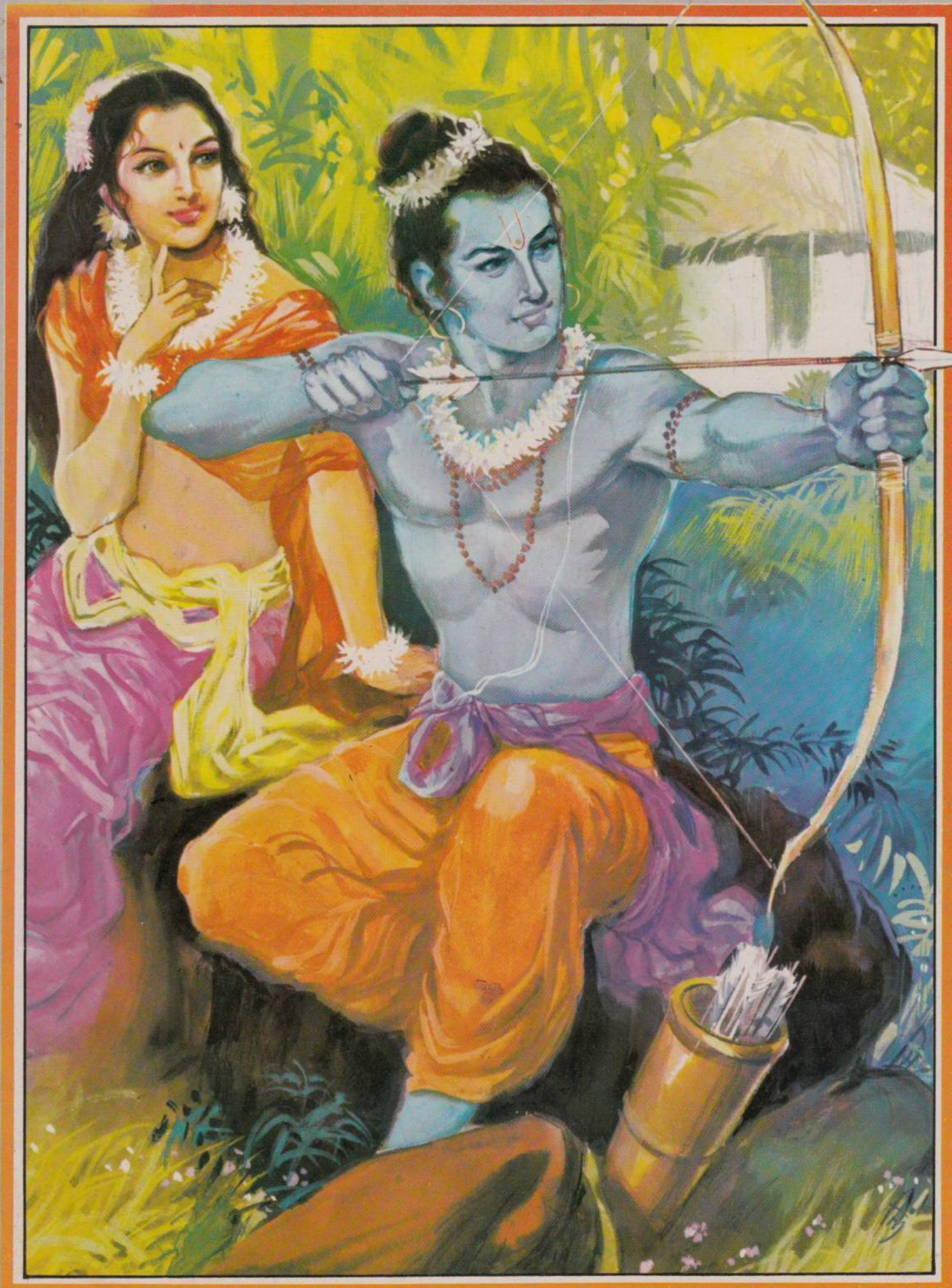




DA-15-Rs. 10.00

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

# राम की कहानी



अमर चित्रकथा द्वारा भारतीय संस्कृति से परिचय बढ़ायें



डायमण्ड  
कॉमिक्स



रामायण संस्कृत भाषा का सर्व-प्रथम महाकाव्य है और वास्तविक कविता की सबसे प्राचीन रचना है। इसी कारण इसके रचयिता, वाल्मीकि ऋषि, आदि कवि माने जाते हैं।

कहा जाता है कि एक क्रौंच पक्षी किसी निर्दयी बहेलिये के बाण का शिकार हो गया तो उसकी मादा की जो करुण दशा हुई उसे देख कर वाल्मीकि के सहानुभूति-भरे हृदय से कविता झरने की तरह फूट निकली। जो जीवंत भावनाएँ यों स्वतः ही बह निकली थीं उन्होंने सशक्त महाकाव्य का रूप लिया। गत २००० वर्षों से भी अधिक समय से यह महाकाव्य भारत के मानस को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। रामायण हमारी उपलब्धियों का ऐसा अभिन्न अंग है कि इसके विभिन्न भाषाओं के संस्करणों में, जो परस्पर एकदूसरे से थोड़े-बहुत भिन्न हैं, हमारी विविधता प्रतिबिम्बित होती है। कविन, तुलसीदास अथवा तुंचन की कृतियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में एक ही विषय का प्रतिपादन करती हैं। और यह विषय राम और सीता के चरित्र में 'पुरुष' एवं 'स्त्री' के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत करता है। राम का जीवन बताता है कि ईश्वर सर्वोत्तम पुरुषों में स्वयं को परिपूर्ण करता है। यही रामायण की कथा है।

अमर चित्र कथा अर्थात् उत्तम पुस्तकें  
अब २६० से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।





# अमर चित्रकथा अब डायमण्ड कामिक्स में



## राम की कहानी

रामायण संस्कृत भाषा का सर्व-प्रथम महाकाव्य है और वास्तविक कविता की सबसे प्राचीन रचना है। इसी कारण इसके रचयिता, वाल्मीकि ऋषि आदि कवि माने जाते हैं।

कहा जाता है कि एक क्रौंच पक्षी किसी निर्दयी बहेलिये के बाण का शिकार हो गया तो उसकी मादा की जो करुण दशा हुई उसे देख कर वाल्मीकि के सहानुभूति-भरे हृदय से कविता झरने की तरह फूट निकली। जो जीवंत भावनाएँ यों स्वतः ही बह निकली थीं उन्होंने सशक्त महाकाव्य का रूप लिया। गत 2000 वर्षों से भी अधिक समय से यह महाकाव्य भारत के मानस को प्रेरणा प्रदान कर रहा है। रामायण हमारी उपलब्धियों का ऐसा अभिन्न अंग है कि इसके विभिन्न भाषाओं के संस्करणों में, जो परस्पर एक दूसरे से थोड़े-बहुत भिन्न हैं, हमारी विविधता प्रतिबिम्बित होती है। कविन, तुलसीदास अथवा तुंचन की कृतियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में एक ही विषय का प्रतिपादन करती हैं। और यह विषय राम और सीता के चरित्र में 'पुरुष' एवं 'स्त्री' के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत करता है। राम का जीवन बताता है कि ईश्वर सर्वोत्तम पुरुषों में स्वयं को परिपूर्ण करता है। यही रामायण की कथा है।

### डायमण्ड कामिक्स में प्रकाशित अमर चित्रकथा

कृष्ण  
शकुन्तला  
राम  
हरिश्चन्द्र  
हनुमान  
बुद्ध  
शिवाजी  
राणा प्रताप  
गुरु गोबिन्द सिंह  
अशोक

गुरु नानक  
पंचतंत्र- I  
बीरबल- I  
झांसी की रानी  
कबीर  
महावीर  
गणेश  
विवेकानन्द  
महात्मा गांधी  
दुर्गावती

गुरु हर गोविन्द  
हितोपदेश- I  
जातक कथाएँ- I  
प्रहलाद  
छत्रसाल  
पद्मिनी  
रंजीत सिंह  
तुलसीदास  
चैतन्य महाप्रभु  
राजा भोज

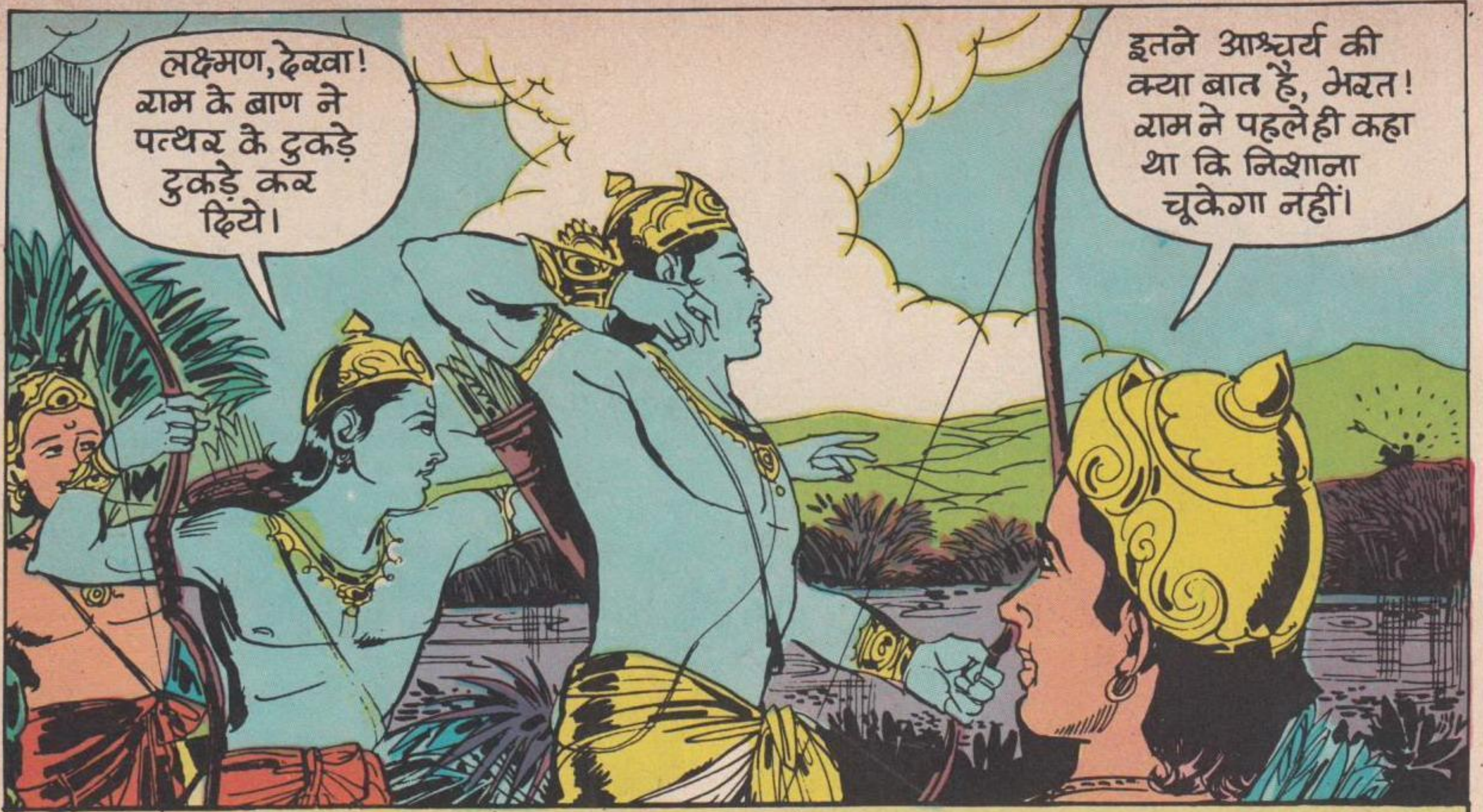


# राम की कहानी



बहुत पहले सरयू नदी के किनारे  
अयोध्या नगरी में राजा दशरथ राज्य करते थे।  
उनके चार पुत्र थे— राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।





लक्ष्मण, देखा!  
राम के बाण ने  
पत्थर के टुकड़े  
टुकड़े कर  
दिये।

इतने आश्चर्य की  
क्या बात है, भरत!  
राम ने पहले ही कहा  
था कि निशाना  
चूकेगा नहीं।

राम रानी कौशल्या के लड़के थे, भरत रानी कैकेयी के, और लक्ष्मण और शत्रुघ्न रानी  
सुमित्रा के। सभी एक दूसरे को बहुत चाहते थे।



वे राक्षस मेरी  
तपस्या में विघ्न  
डालते हैं। केवल  
राम इनसे  
निबट  
सकते  
हैं।

धनुर्विद्या में राम की निपुणता के बारे में दूर-दूर के लोग जानते थे।  
वनवासी विश्वामित्र भी।



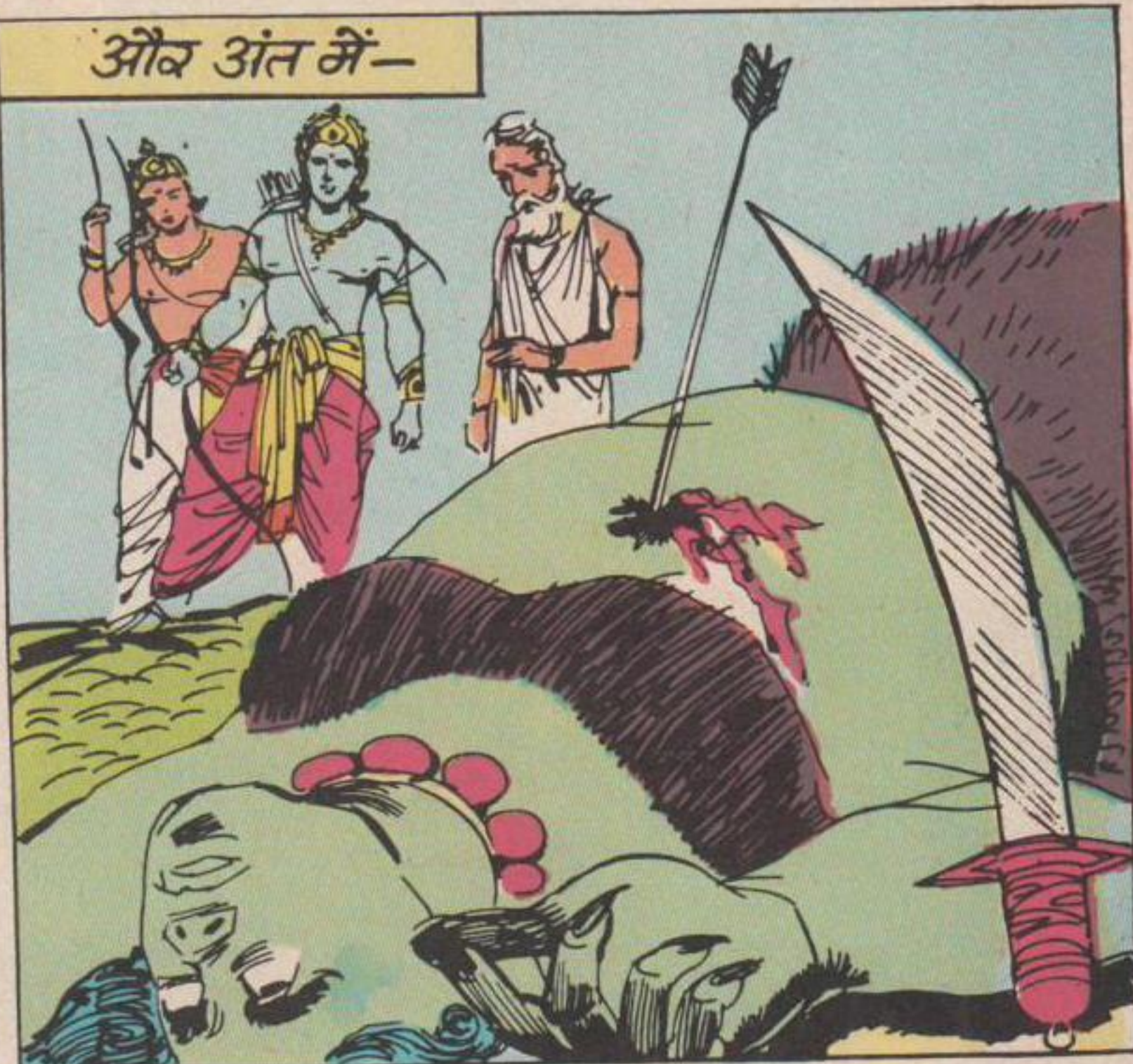
राजा दशरथ की अनुमति से वे राम और लक्ष्मण को वन में ले आये। एक दिन—



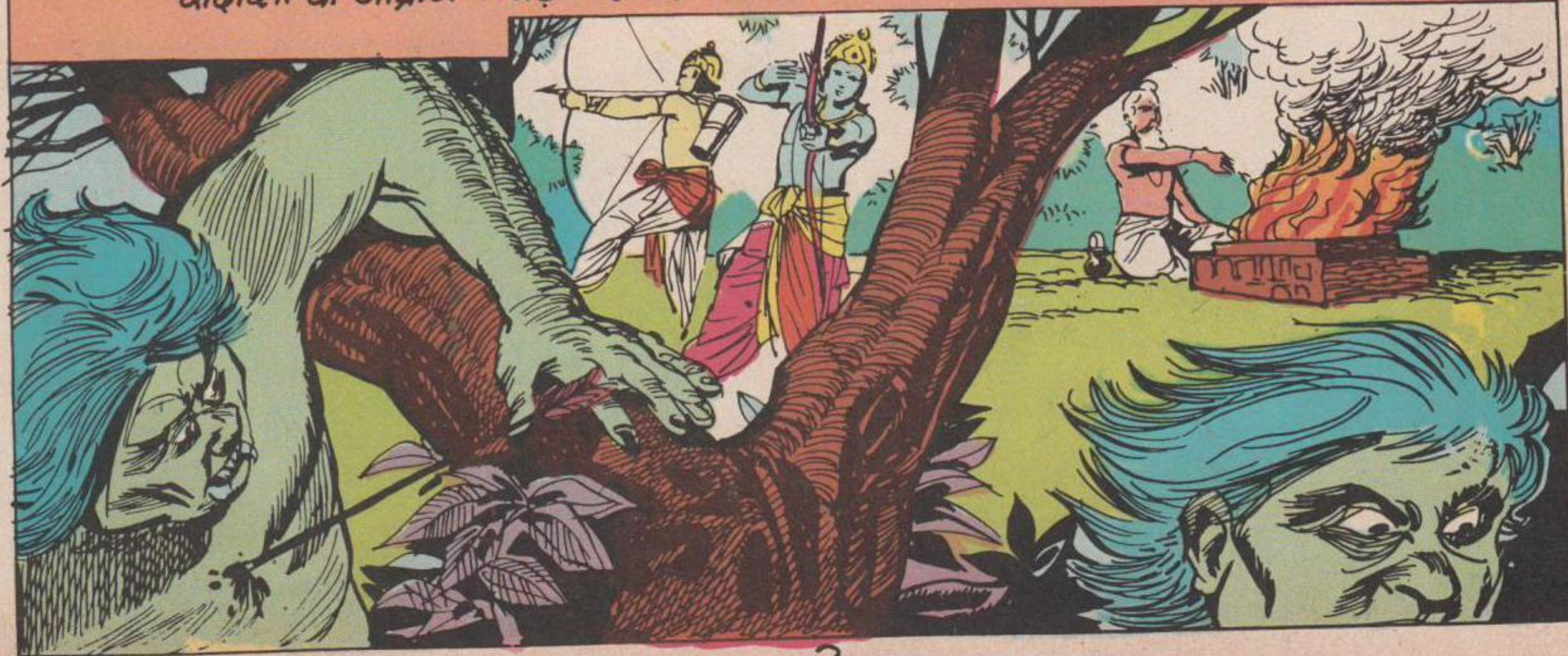
राम और ताड़का में घमासान  
युद्ध हुआ।



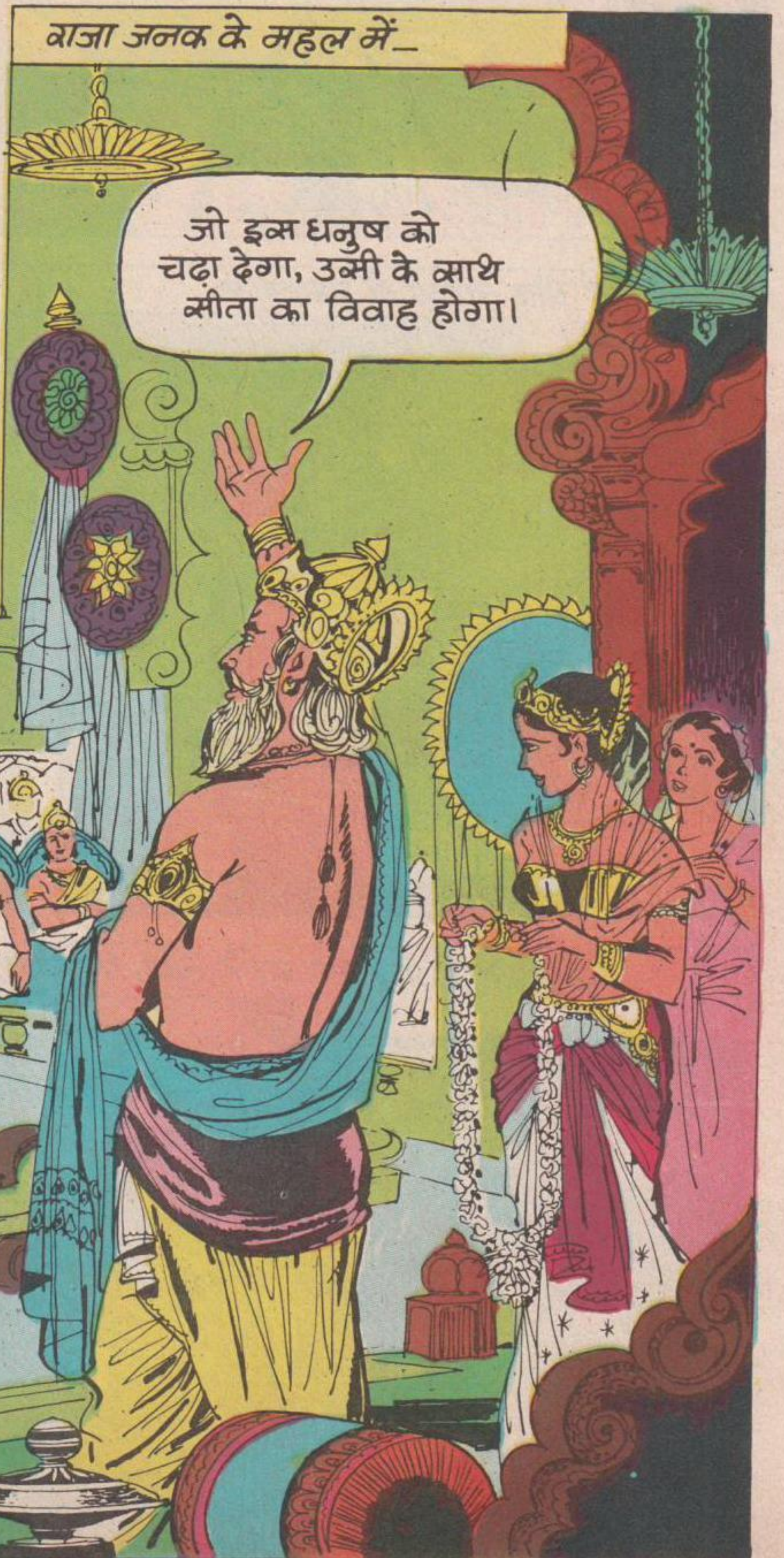
और अंत में—



राक्षसों के आक्रमण बढ़ने लगे, पर राम ने अपने बाणों से उन्हें मार भगाया।

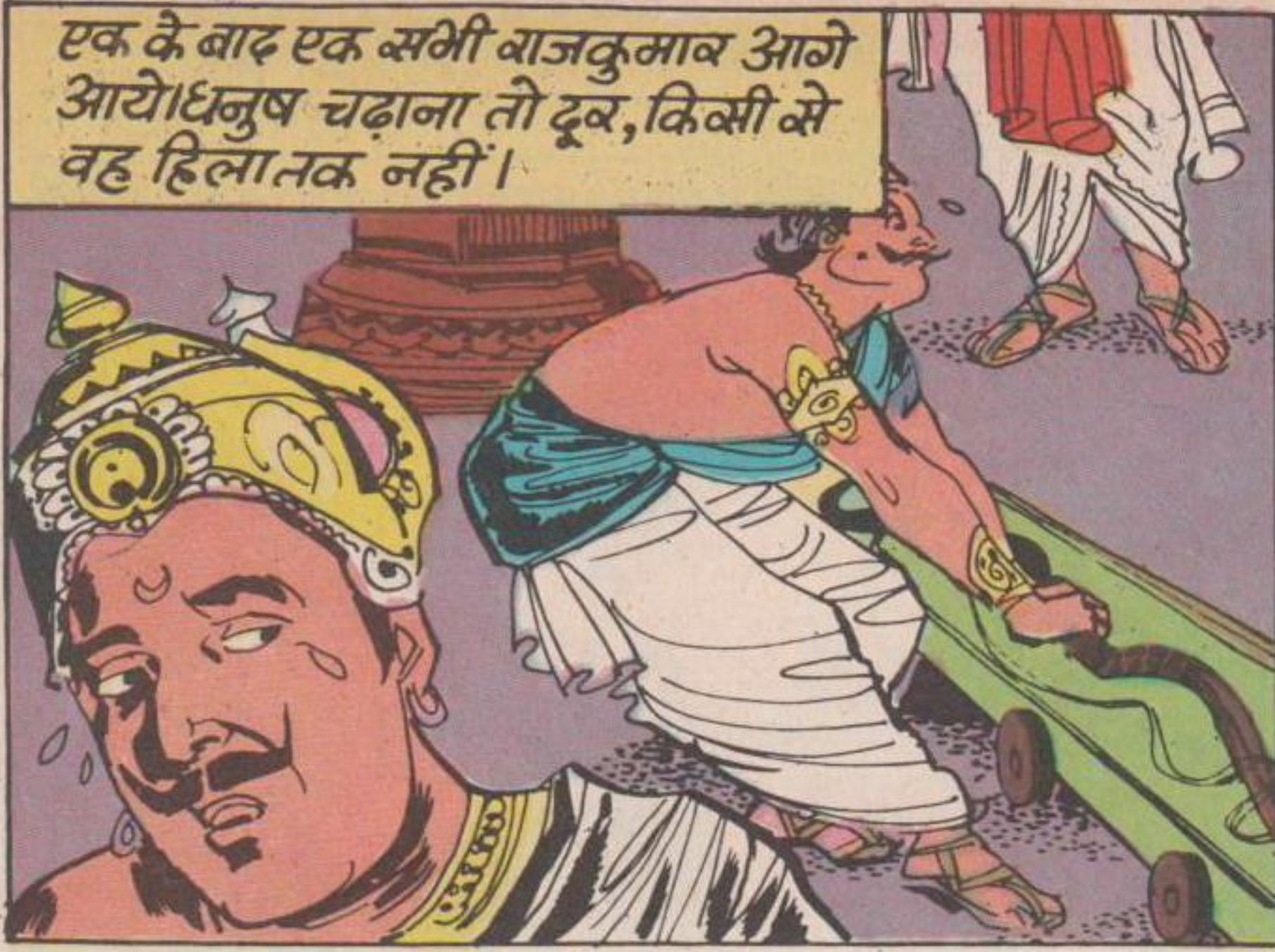








एक के बाद एक सभी राजकुमार आगे  
आये। धनुष चढ़ाना तो दूर, किसी से  
वह हिला तक नहीं।



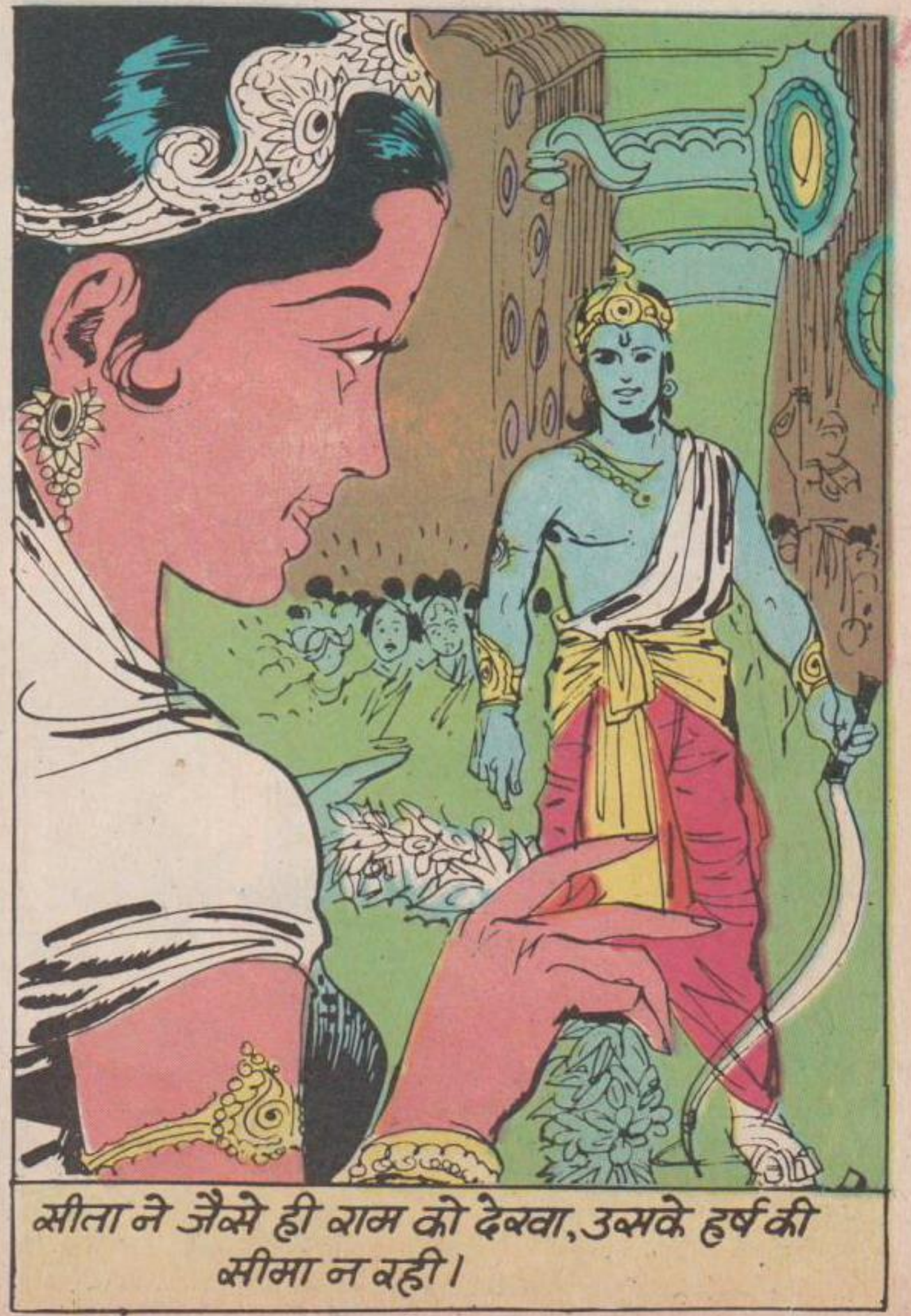
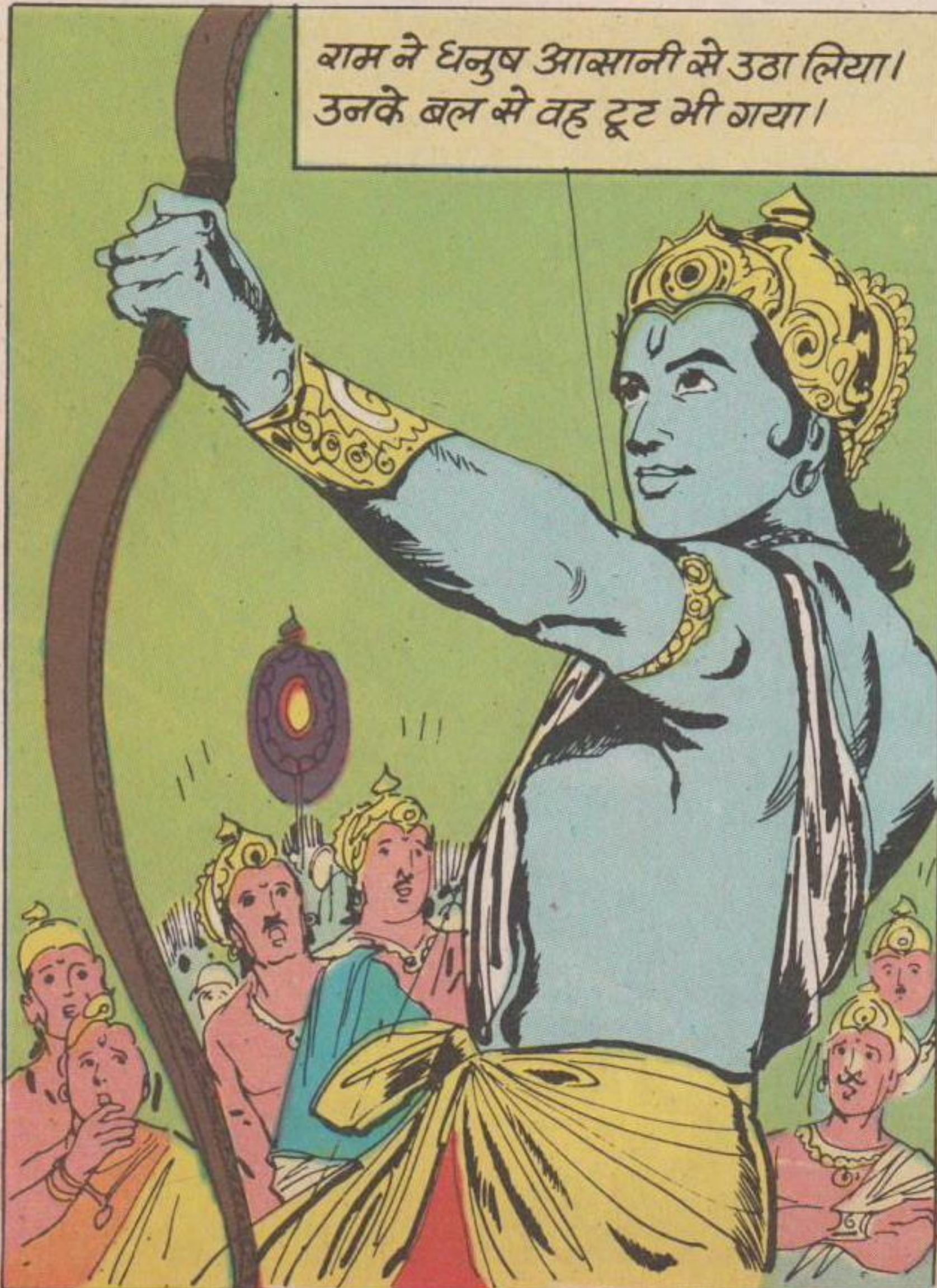
कोई भी सफल न रहा।  
पर सब मिलकर इसे उठा  
लेंगे।



बेटा राम!  
सब हार गये।  
अब तुम जाओ  
और धनुष चढ़ा  
कर सीता का  
दुख दूर करो!



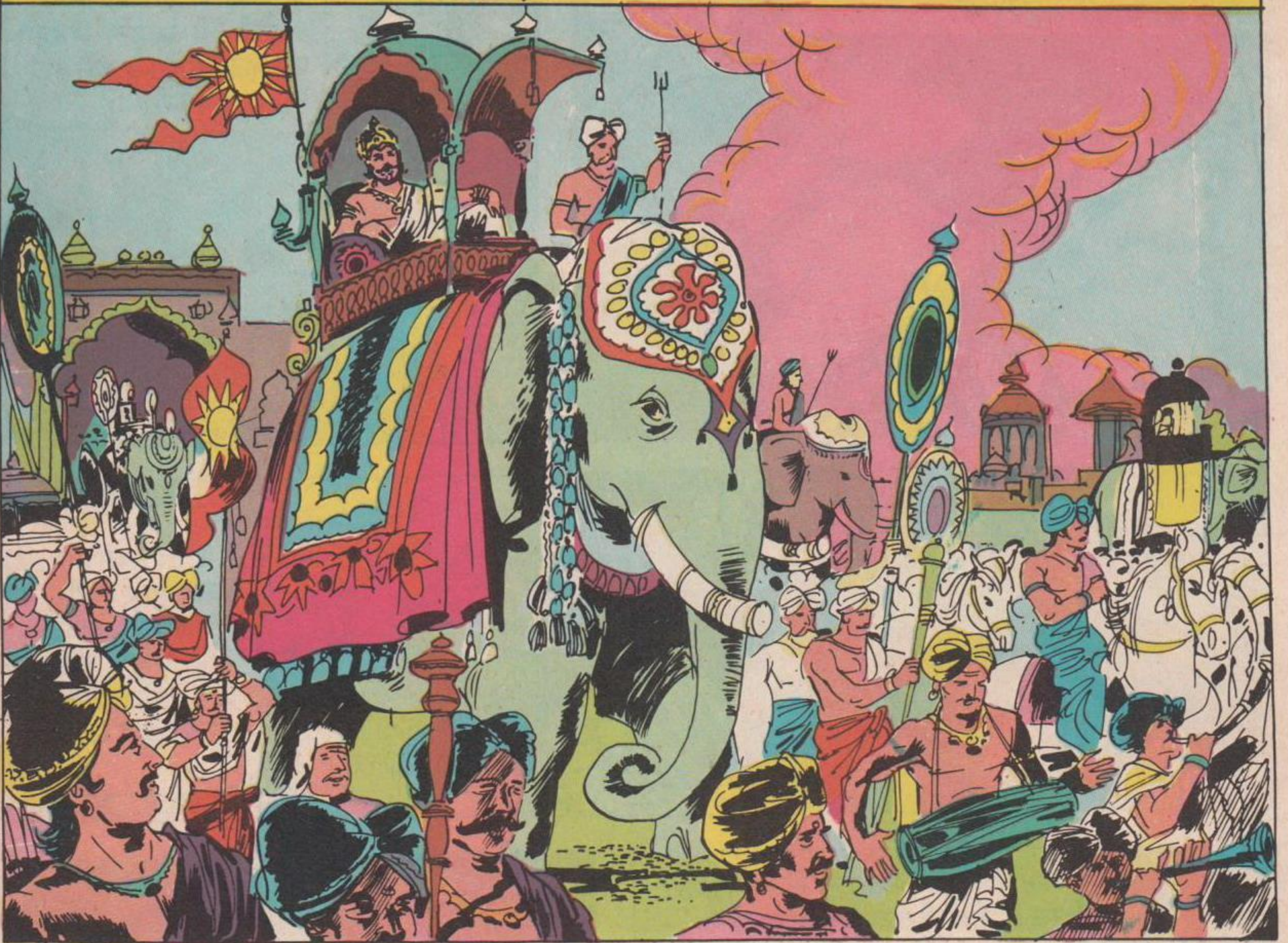
राम ने धनुष आसानी से उठा लिया।  
उनके बल से वह टूट भी गया।



सीता ने जैसे ही राम को देखा, उसके हर्ष की  
सीमा न रही।



जब यह हर्षदायक समाचार अयोध्या पहुँचा तो राजा दशरथ बग़त सजाकर मिथिला को  
चल पड़े...



..जहाँ राम का विवाह सीता से हुआ।













इन कठोर शब्दों को सुनकर राजा अचेत होकर गिर पड़े।

राम के प्रति इतनी  
कठोर न बनो बानी!  
वह अत्यन्त सज्जन हैं।



जब राम को पता चला—

माँ, मैं  
पिता का वचन  
पूरा करूँगा



सीता और लक्ष्मण ने भी वन में राम के साथ जाने की ज़िद की।  
उनके पीछे थी— अयोध्या की जनता।

मंत्रिवर! आप  
इन्हें समझा-बुझा कर  
वापस तो  
कीजिए।

नहीं, हम सब आपके साथ चलेंगे।



जब शाम हुई, तो वे विश्राम के लिए रुके।  
अगले दिन  
सुबह—

चलो निकल चलें,  
ये सब जाग गये तो साथ  
चल देंगे।





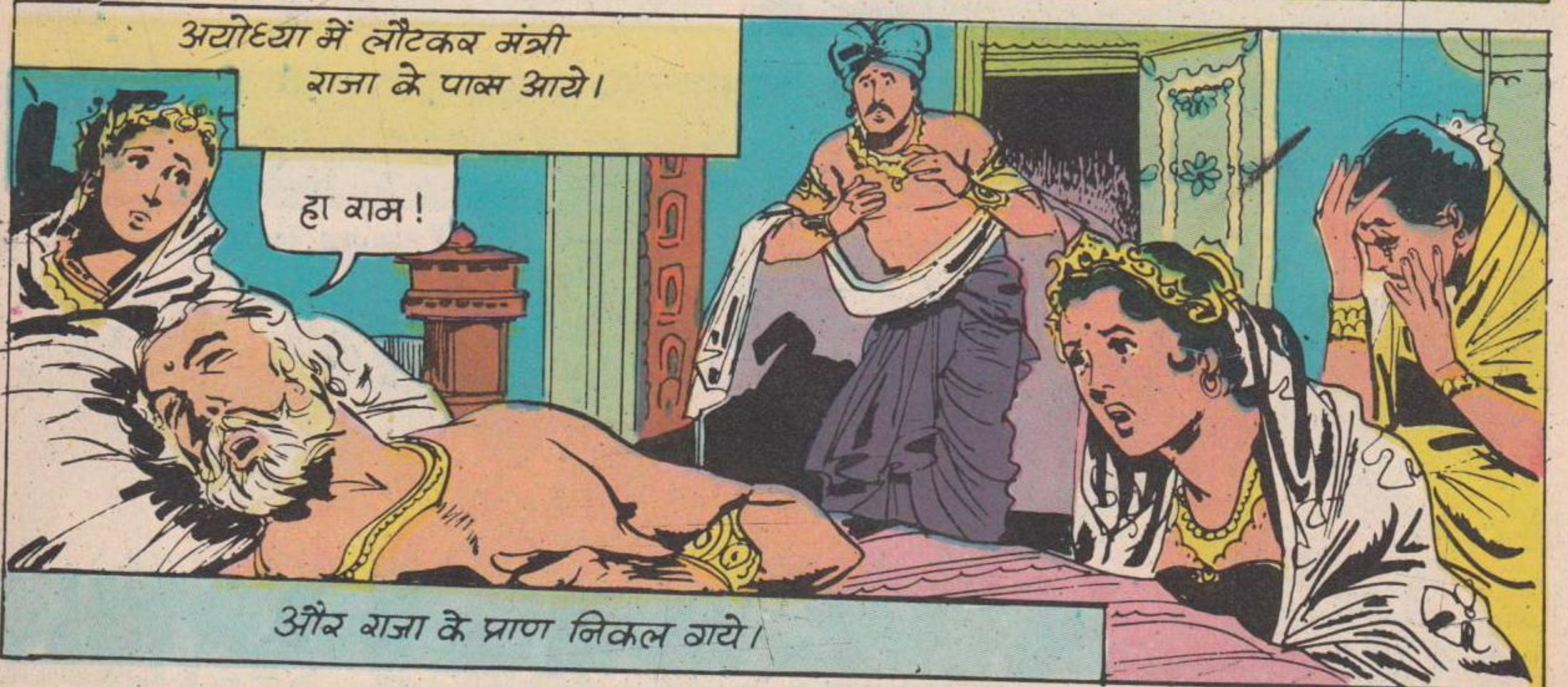
गंगा के किनारे राम, लक्ष्मण और सीता मंत्री सुमंत से  
विदा माँगने लगे।

हम नदी पार कर  
दक्षिणी दिशा की ओर  
जायेंगे। आप वापस  
अयोध्या को जायें



अयोध्या में लौटकर मंत्री  
राजा के पास आये।

हा राम!



और राजा के प्राण निकल गये।

भरत अपने ननिहाल से लौट कर सीधे अपनी  
माँ के पास पहुँचे।

माँ, क्या बात है?  
सब चुप क्यों  
हैं?

सब ठीक है।  
तुम राजा बनोगे।  
तुम्हारे पिता नहीं रहे,  
और राम को चौदह  
वर्षों का वनवास मिला  
है।





भरत सुनकर सन्न रह गये।  
राजगुरु वशिष्ठ ने उन्हें  
सान्त्वना दी।

मुझे राजपाट नहीं  
चाहिए! मैं अभी  
राम के पास जाता  
हूँ!

दुखी न हो बेटा। अब अपने धर्म का  
पालन करो— राज्यभार संभालो!

चित्रकूट में जहाँ राम, लक्ष्मण और सीता रह रहे थे—

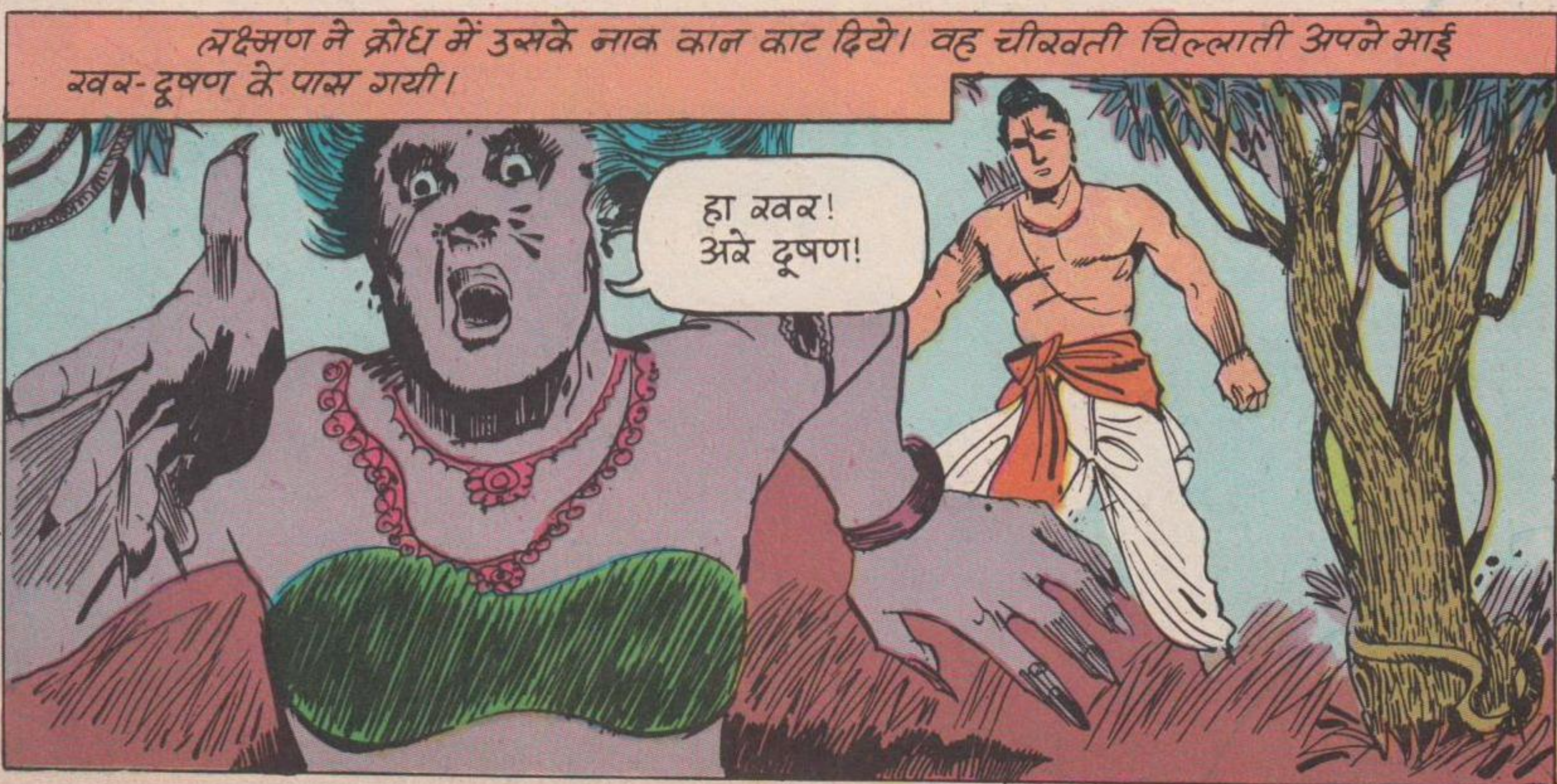
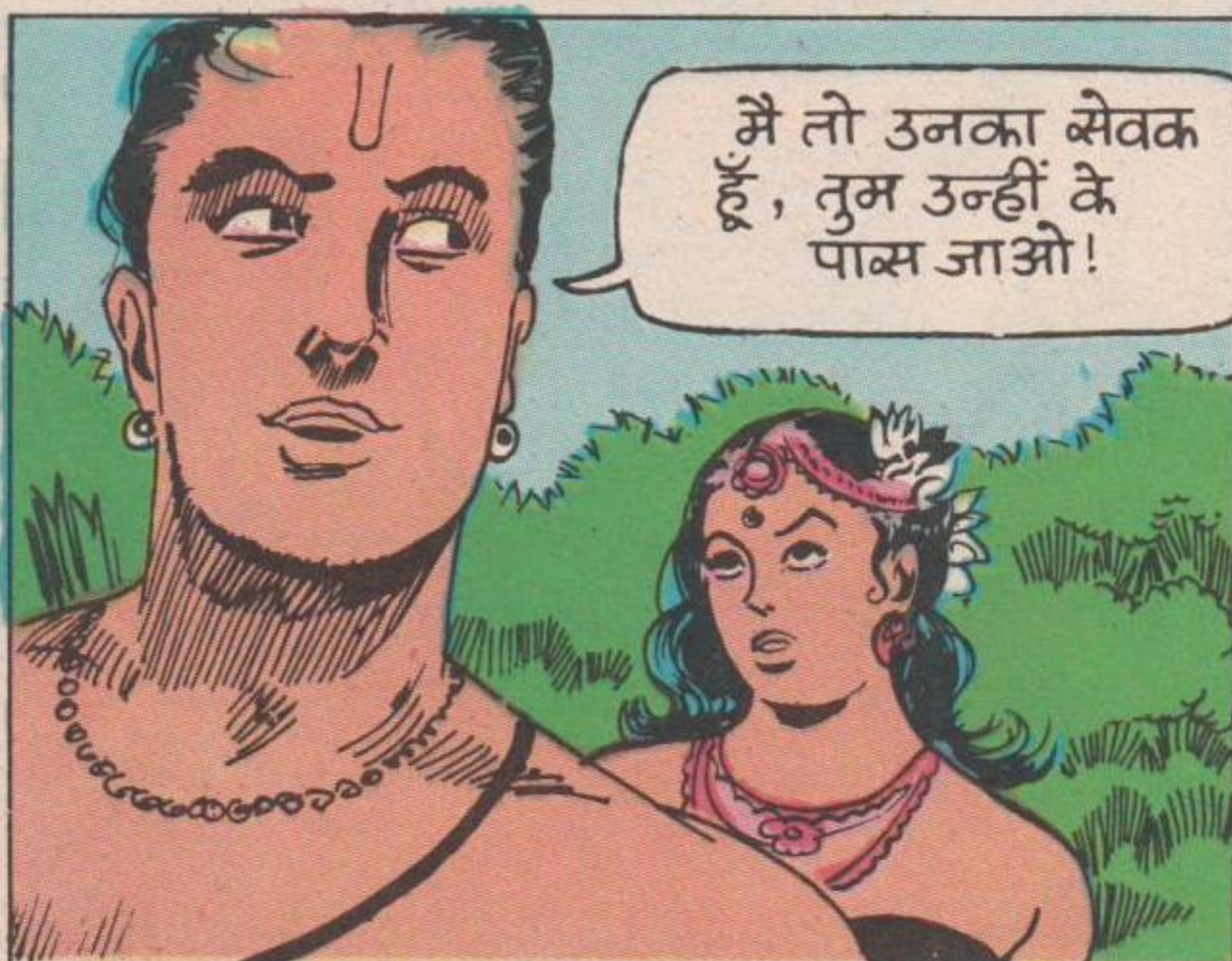
भरत सेना लेकर  
लड़ने आ रहे हैं, मैं...

नहीं लक्ष्मण !  
धीरज से काम लो।  
भरत को आने  
दो।

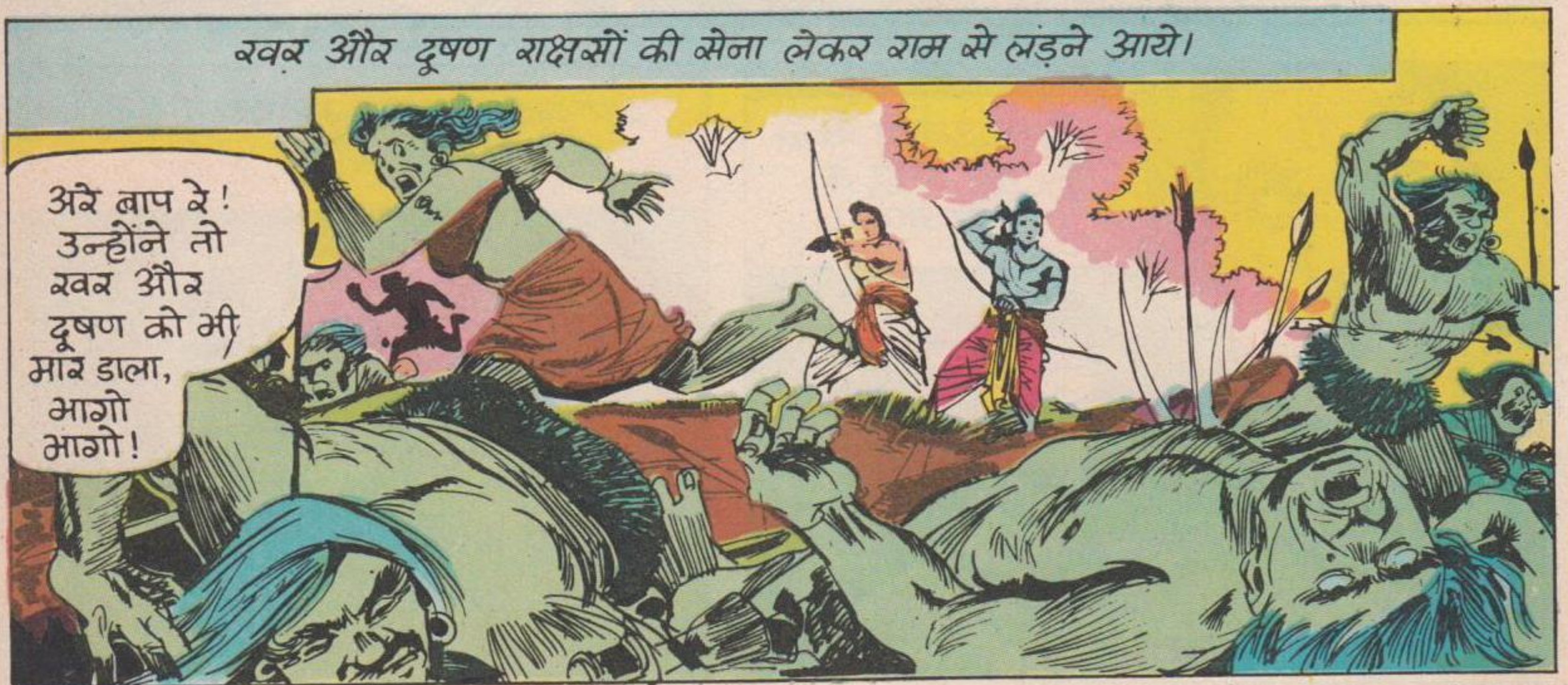




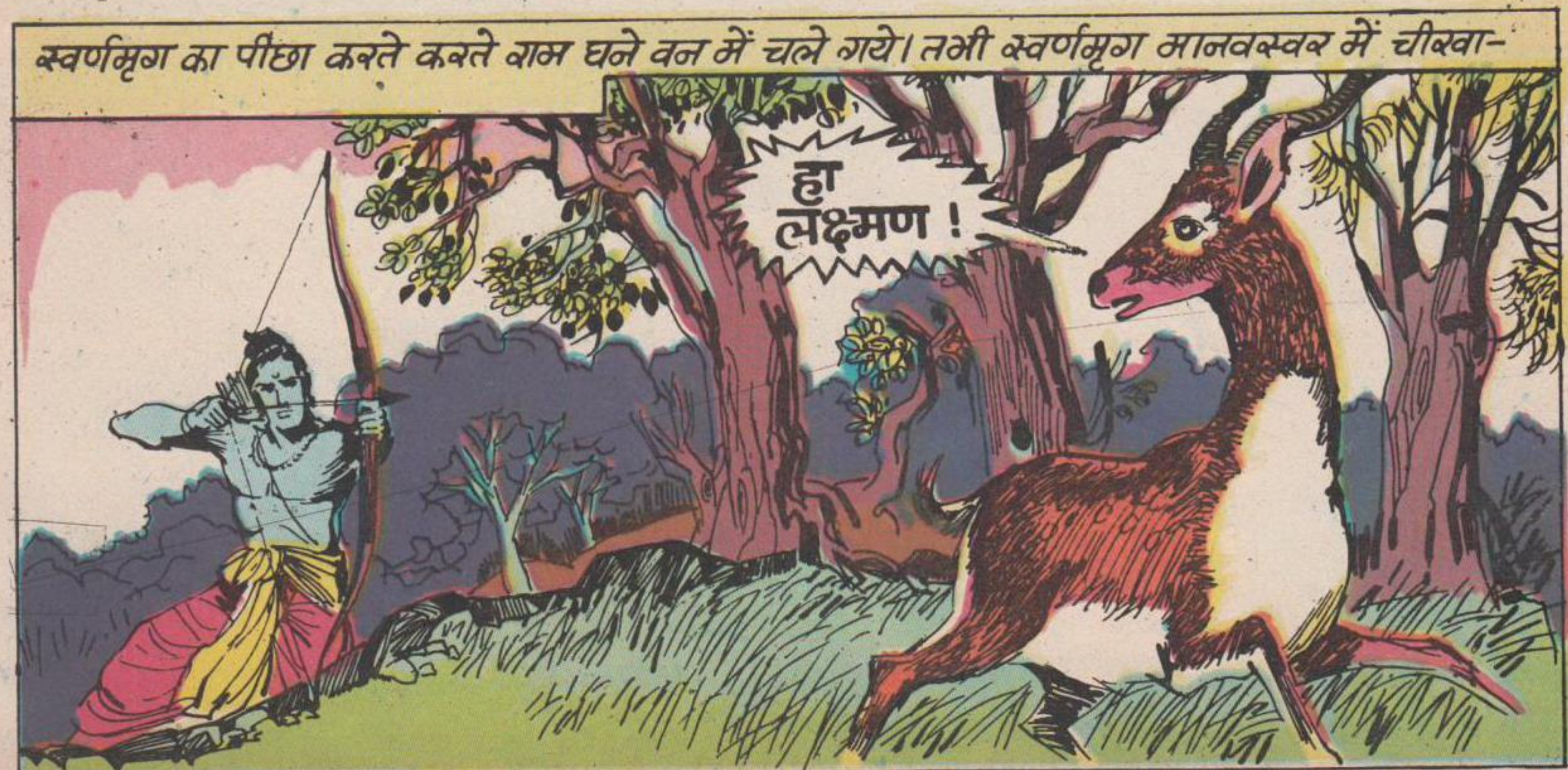




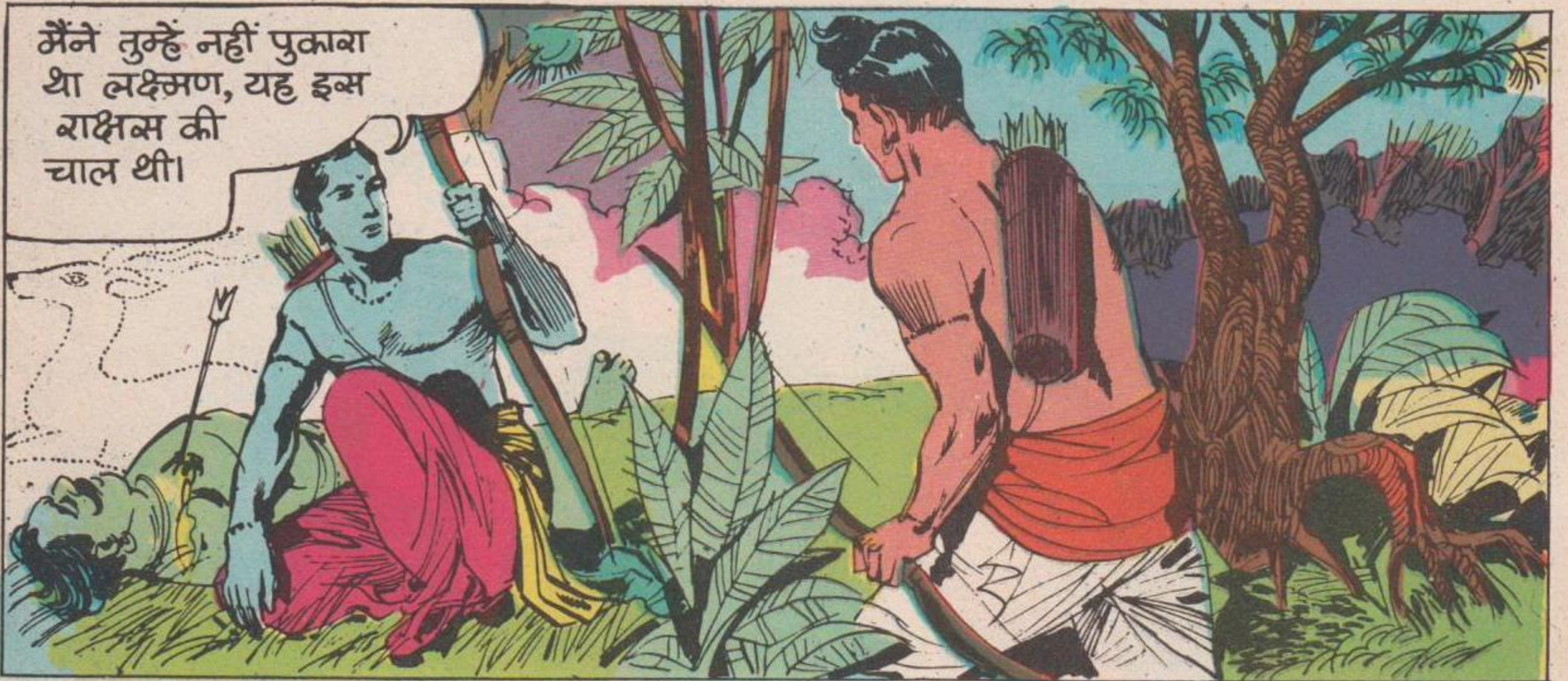












इस बीच रावण संन्यासी के रूप में सीता के पास आया।





सीता भिक्षा लेकर रावण के पास आयी कि  
रावण ने उन्हें उठा लिया...



और अपने रथ में उड़ा ले चला।

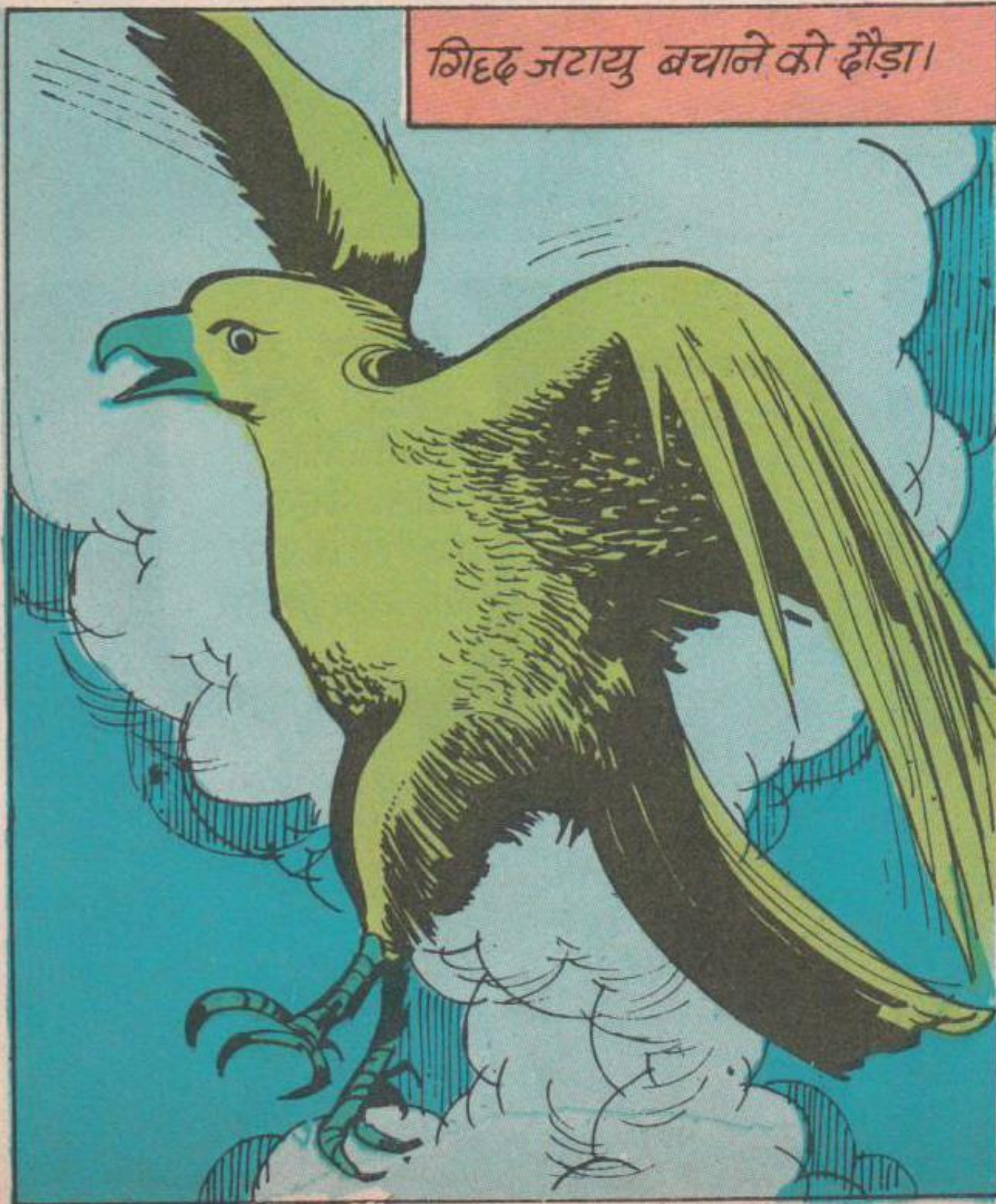


बचाओ,  
राम ! लक्ष्मण  
बचाओ!  
दौड़ो!

कोई तो  
बचाओ इस  
राक्षस से!



गिद्ध जटायु बचाने को दौड़ा।



अरे जा बूढ़े गीध, तू  
रावण का सामना  
करने चला है !



जब सीता को खोजते हुए राम वहाँ पहुँचे

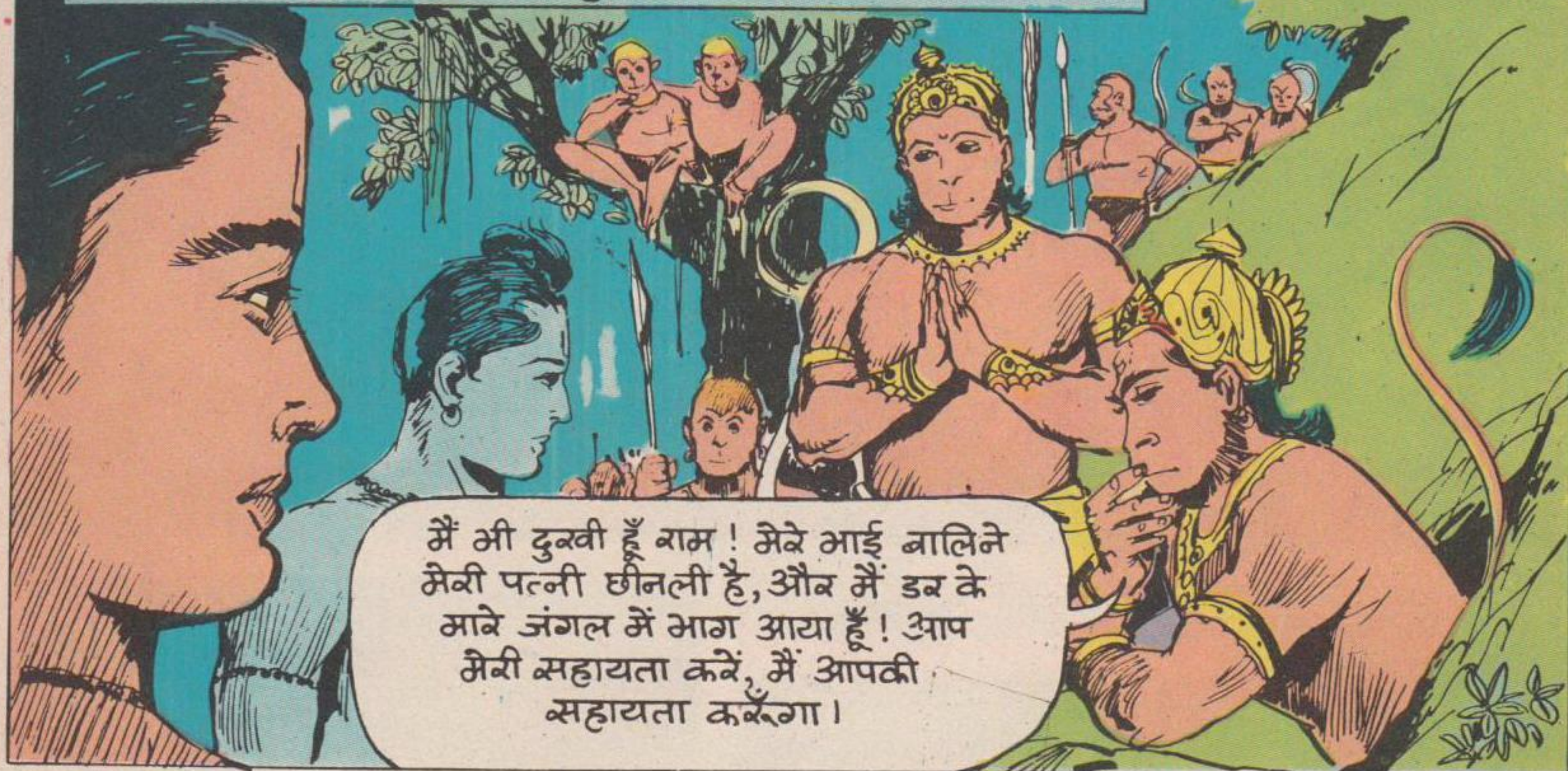
मैं बचा न पाया, रावण  
उन्हें लेकर दक्षिण  
की ओर चला गया!



बेचारा जटायु!  
मेरे लिए उसने  
अपनी जान दे दी!

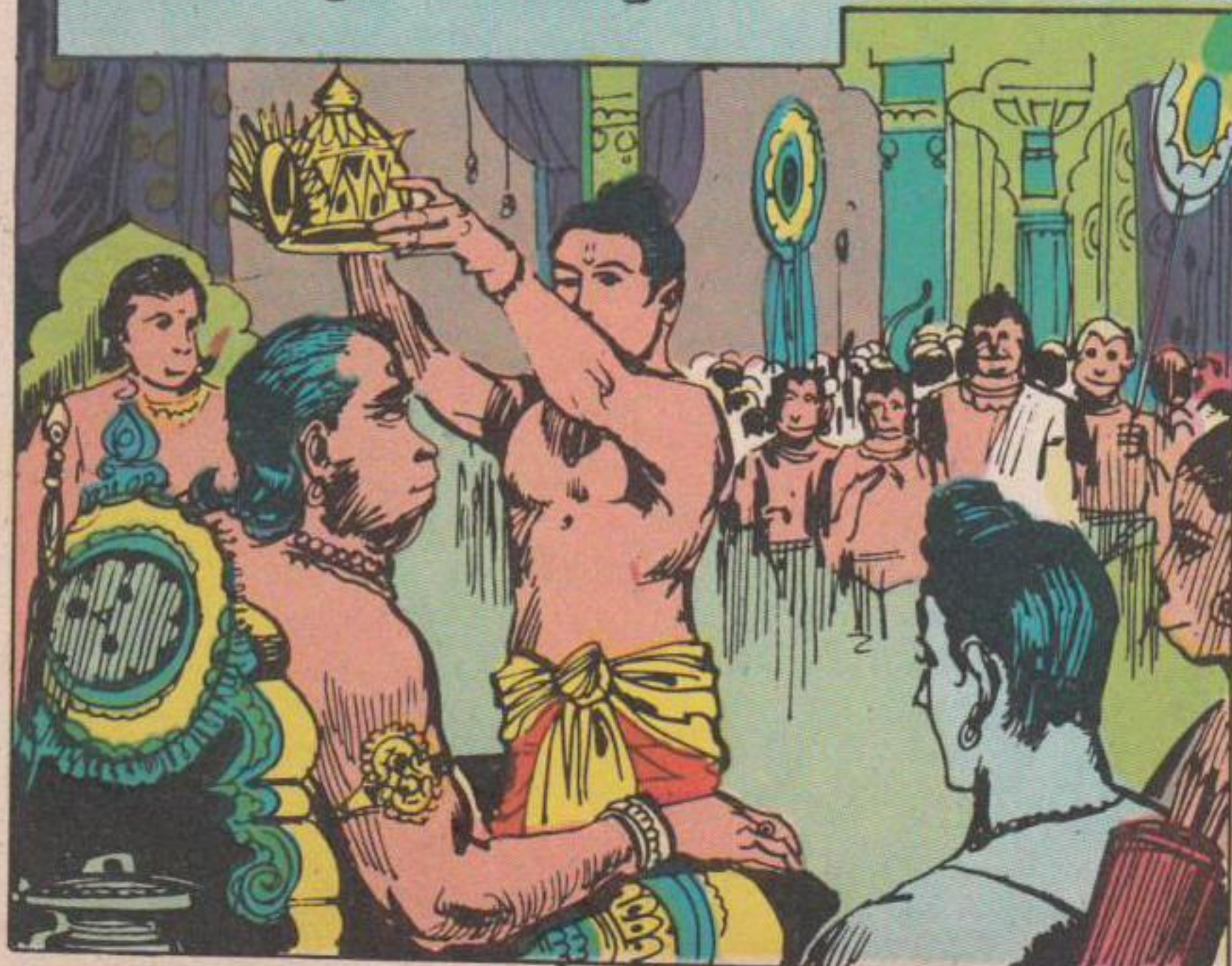


सीता की खोजते हुए वे और आगे गये, जहाँ उनकी भेंट वानरपति बालि के भाई  
सुग्रीव और मंत्री हनुमान से हुई।



मैं भी दुखी हूँ राम! मेरे भाई बालिने  
मेरी पत्नी छीनली है, और मैं डर के  
मारे जंगल में भाग आया हूँ! आप  
मेरी सहायता करें, मैं आपकी  
सहायता करूँगा।

राम ने बालि को मार कर सुग्रीव को राजा बना दिया  
और बालिपुत्र अंगद को युवराज।



बाद में—

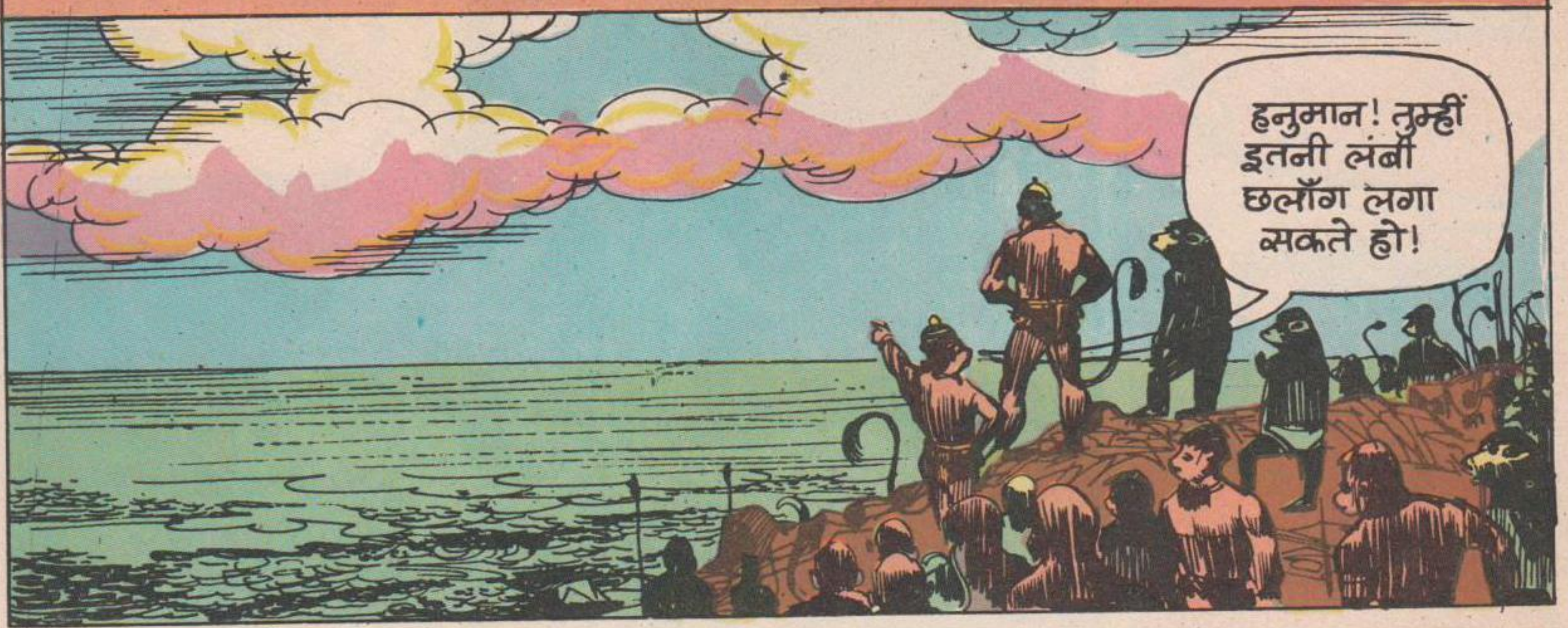
हनुमान! अब  
तुम अपनी  
टोली लेकर  
सीता का पता  
लगाओ!

हनुमान, यह  
अंगूठी लेते  
जाओ। यदि  
सीता मिल  
गयी तो वे इसे  
पहचान लेंगी।





खोजते-खोजते बीछ-वानर सेना समुद्र के दक्षिणी किनारे पहुँच गयी



हनुमान आकाश में उड़ चले।

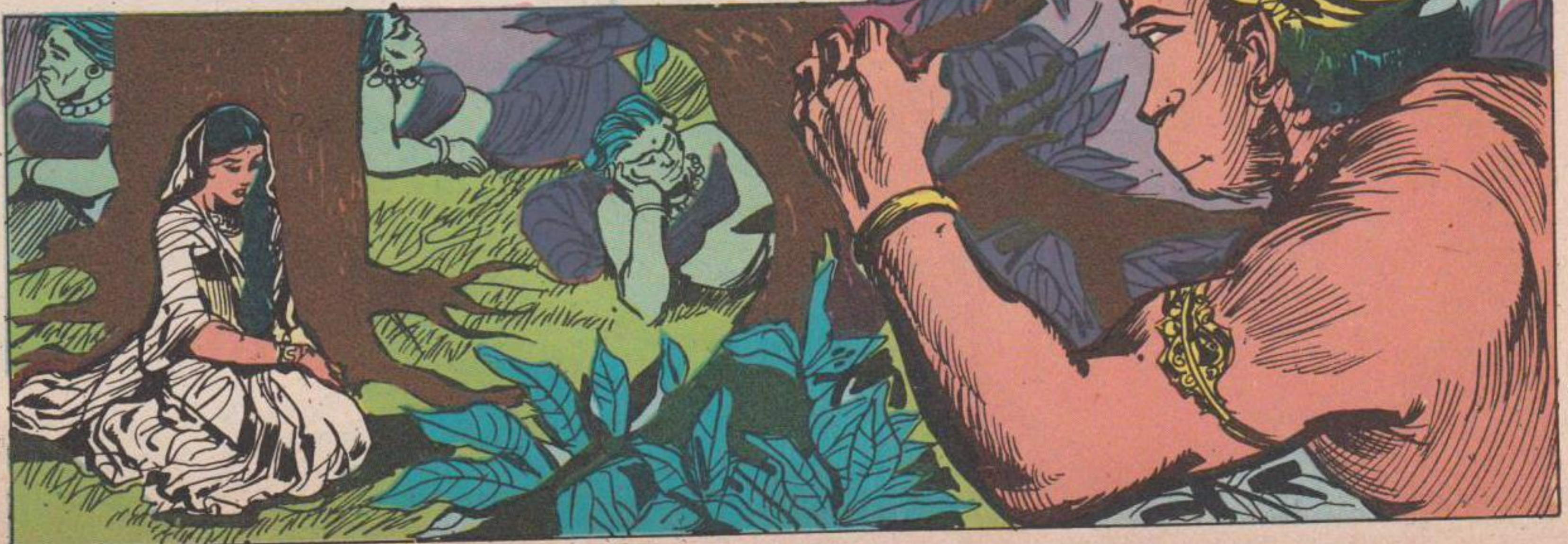


लंका में—



अंत में एक बाटिका में—

शायद सीता ही हैं!





हनुमान ने राम की  
अँगूठी पैद से गिरा दी।



राम के बिना जीते इतने  
दिन हो गये; मन होता  
है आत्महत्या कर लूँ।  
अबे यह राम की  
अँगूठी! यहाँ कैसे!

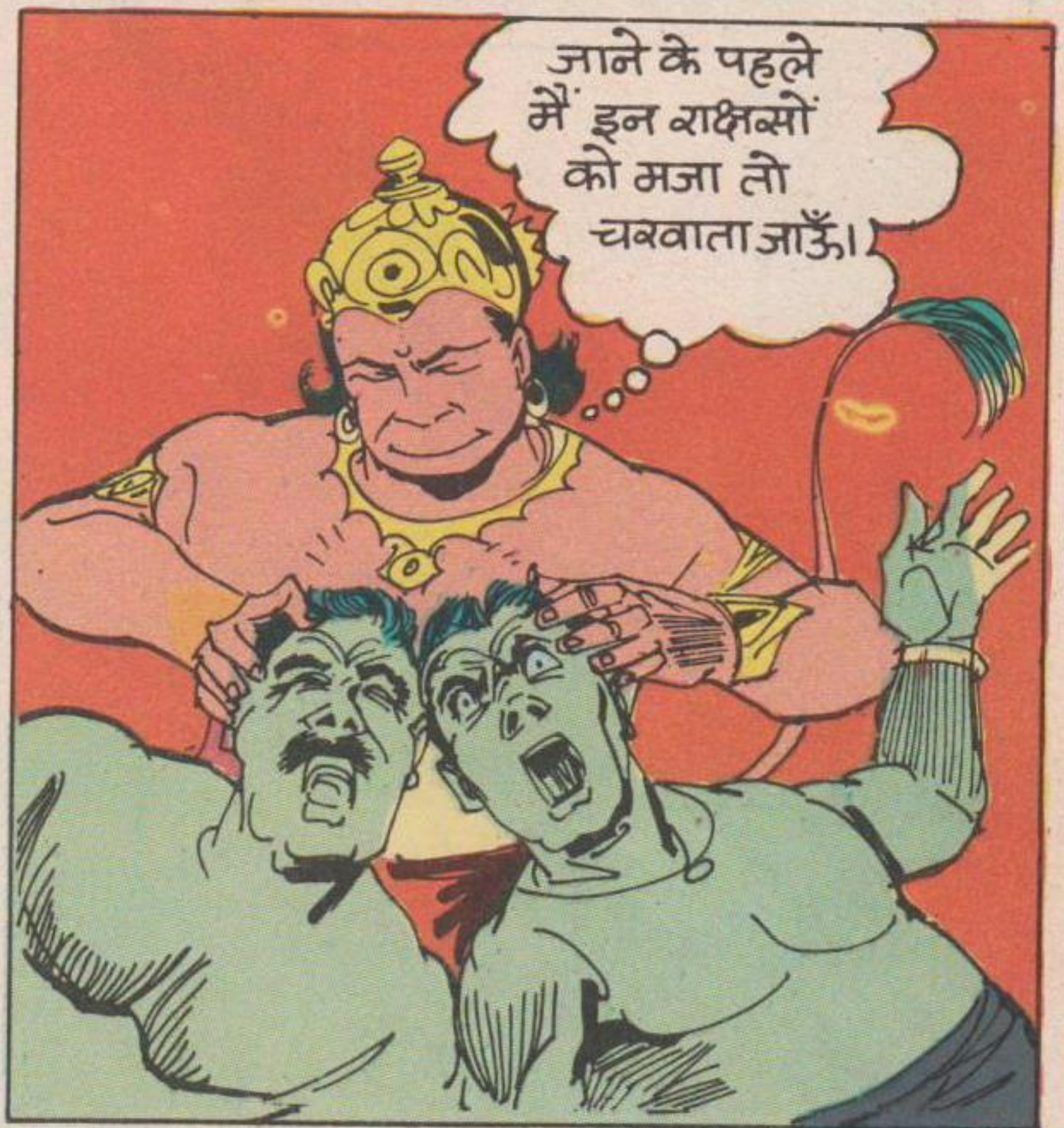


अँगूठी मैं लाया  
था। मैं लौटकर  
राम को आपके  
बारे में बताऊँगा।  
वे रावण का वध  
कर आपका उद्धार  
करेंगे।



हनुमान नीचे  
उतर आये।

जाने के पहले  
मैं इन राक्षसों  
को मजा तो  
चखाता जाऊँ।



पकड़ो, पकड़ो  
इस लंदर की।





हनुमान ने बाटिका के आसपास मिले सब राक्षसों को मार गिराया। रावण ने अपने बेटे अक्षयकुमार के साथ कुछ और राक्षस भेजे।



रावण के दरबार में—

बेटा मेघनाद, तुम उस बंदर को पकड़कर यहाँ ले आओ।

उस बंदर ने राजकुमार अक्षयकुमार को भी मार डाला।

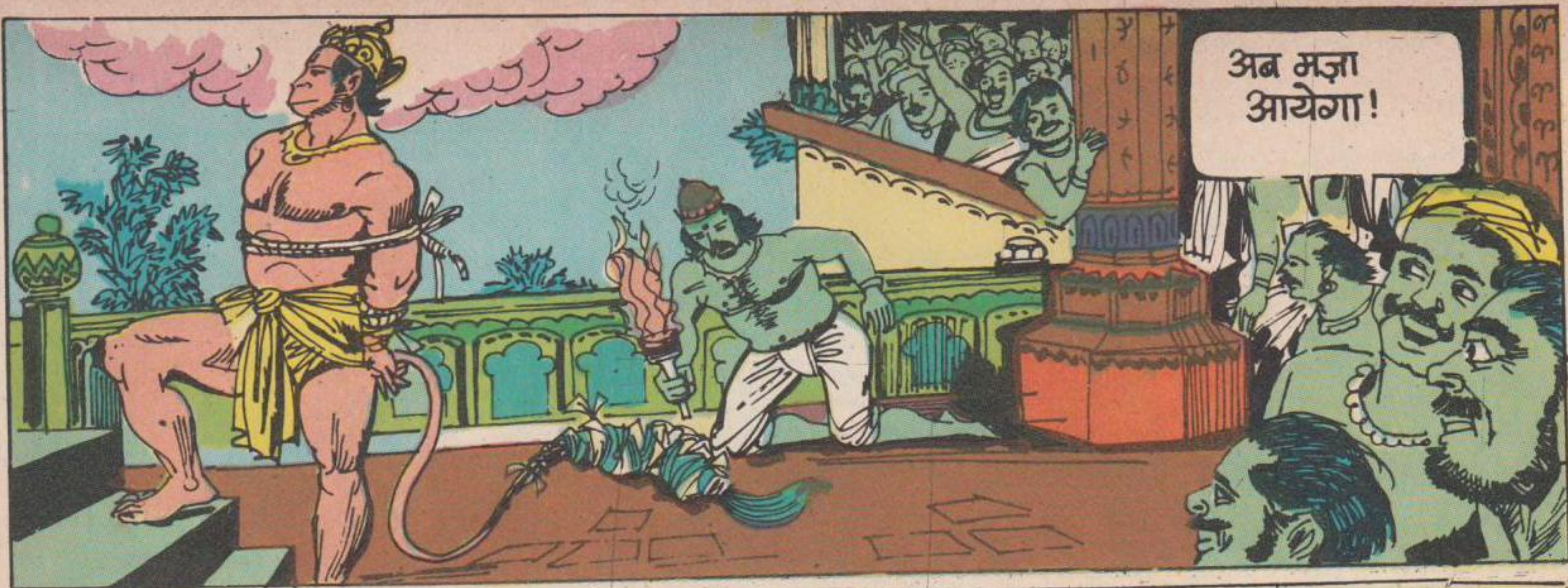


मेघनाद हनुमान को बाँध कर दरबार में लाये।

लगा दो इस दुष्ट बंदर की पूँछ में आग!







हनुमान ने अपनी रस्मियाँ ढीली कर दीं। उनकी पूँछ लम्बी हो गयी। उससे उन्होंने सारी लंका में आग लगा दी।

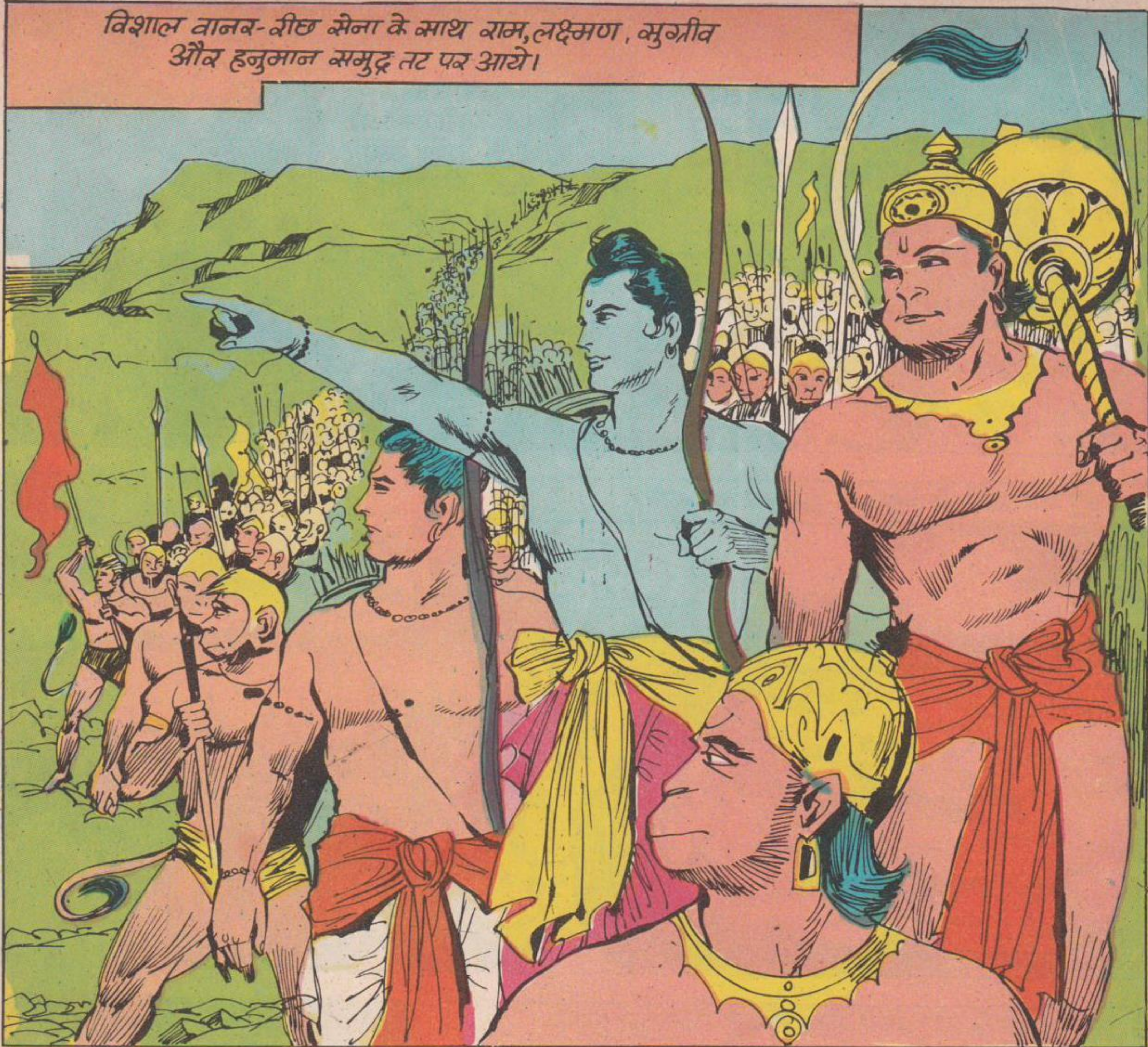


लंका जला कर हनुमान राम के पास लौट आये।





विशाल वानर-सेना के साथ राम, लक्ष्मण, सुग्रीव  
और हनुमान समुद्र तट पर आये।



जब यह समाचार रावण को मिला तो  
उसके भाई विभीषण ने उसे समझाया—

दुसरे की पत्नी  
का हरण करना  
उचित और  
बुद्धिमत्ता पूर्ण नहीं है।

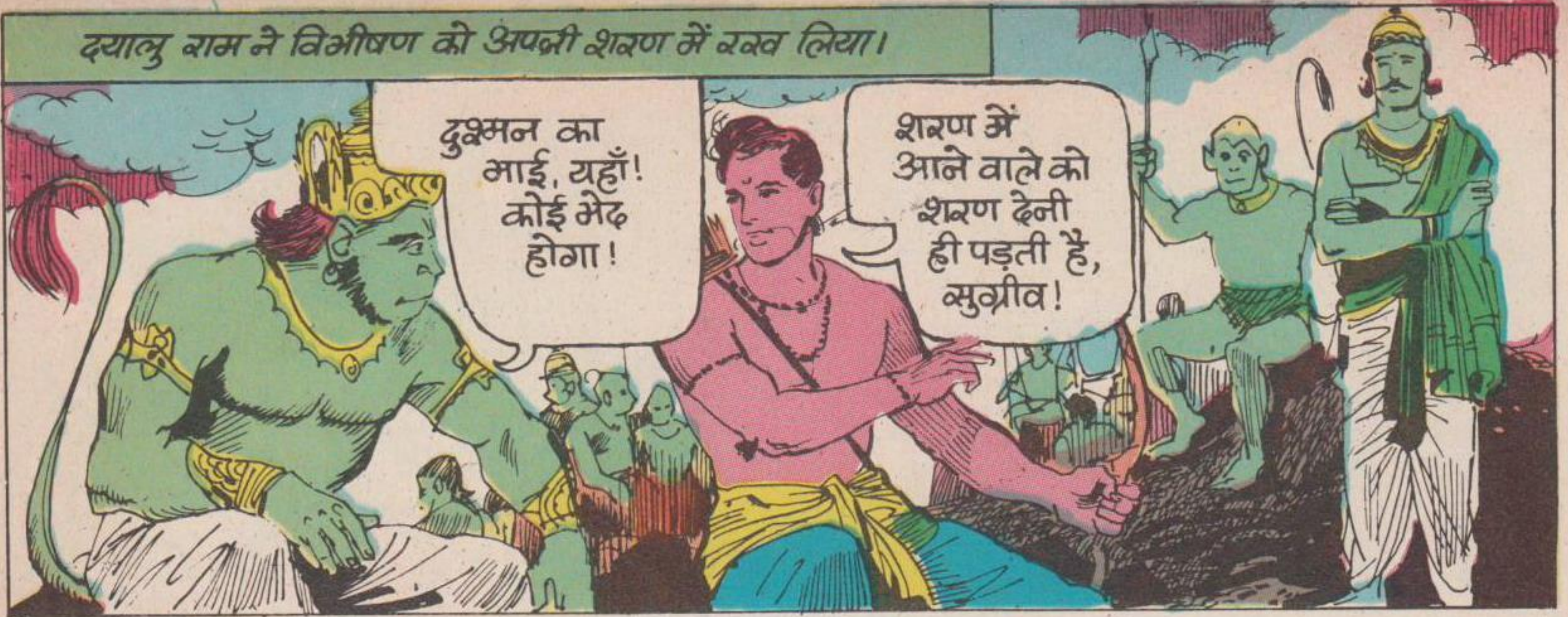


निकल जा यहाँ से!  
यह उपदेश उन्हीं  
भिरवमंगे छोकरो को  
दे जा कर!

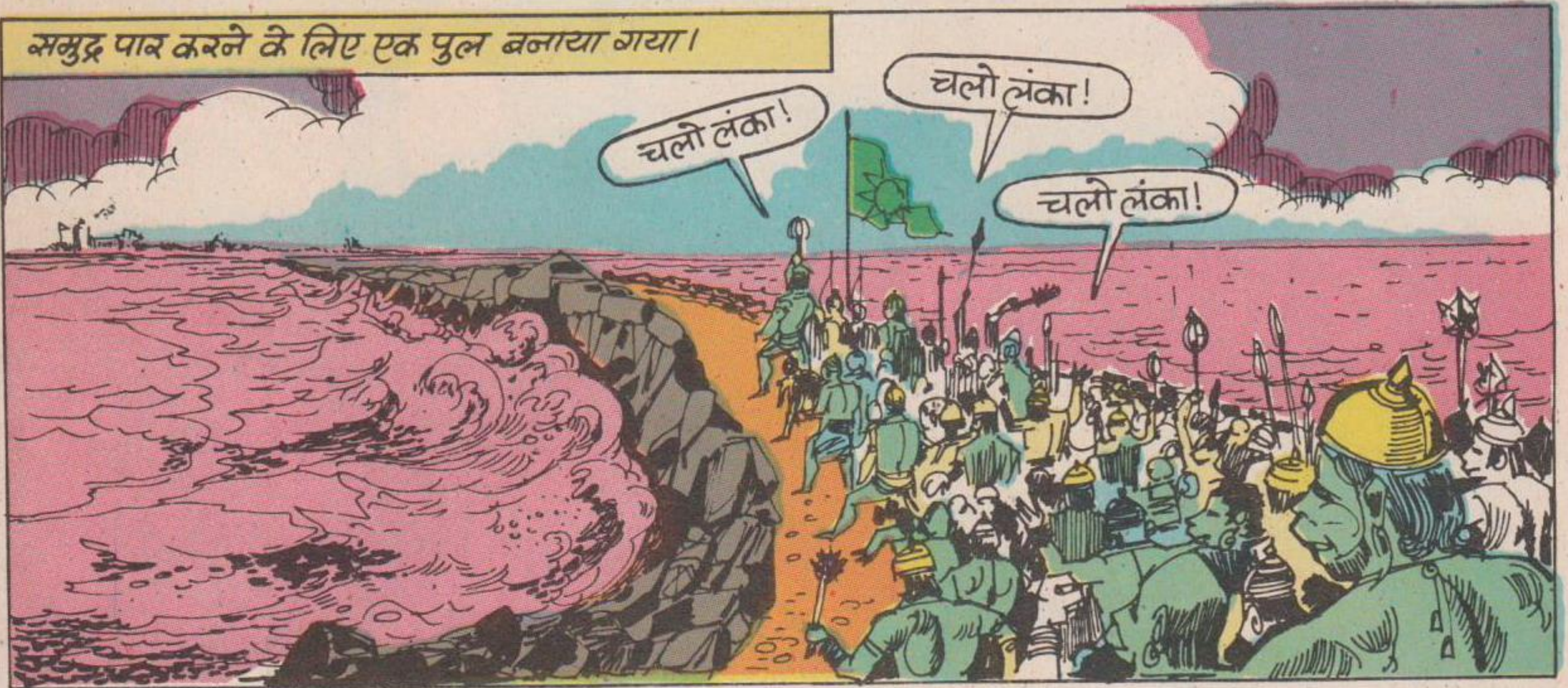




दयालु राम ने विभीषण को अपनी शरण में रख लिया।

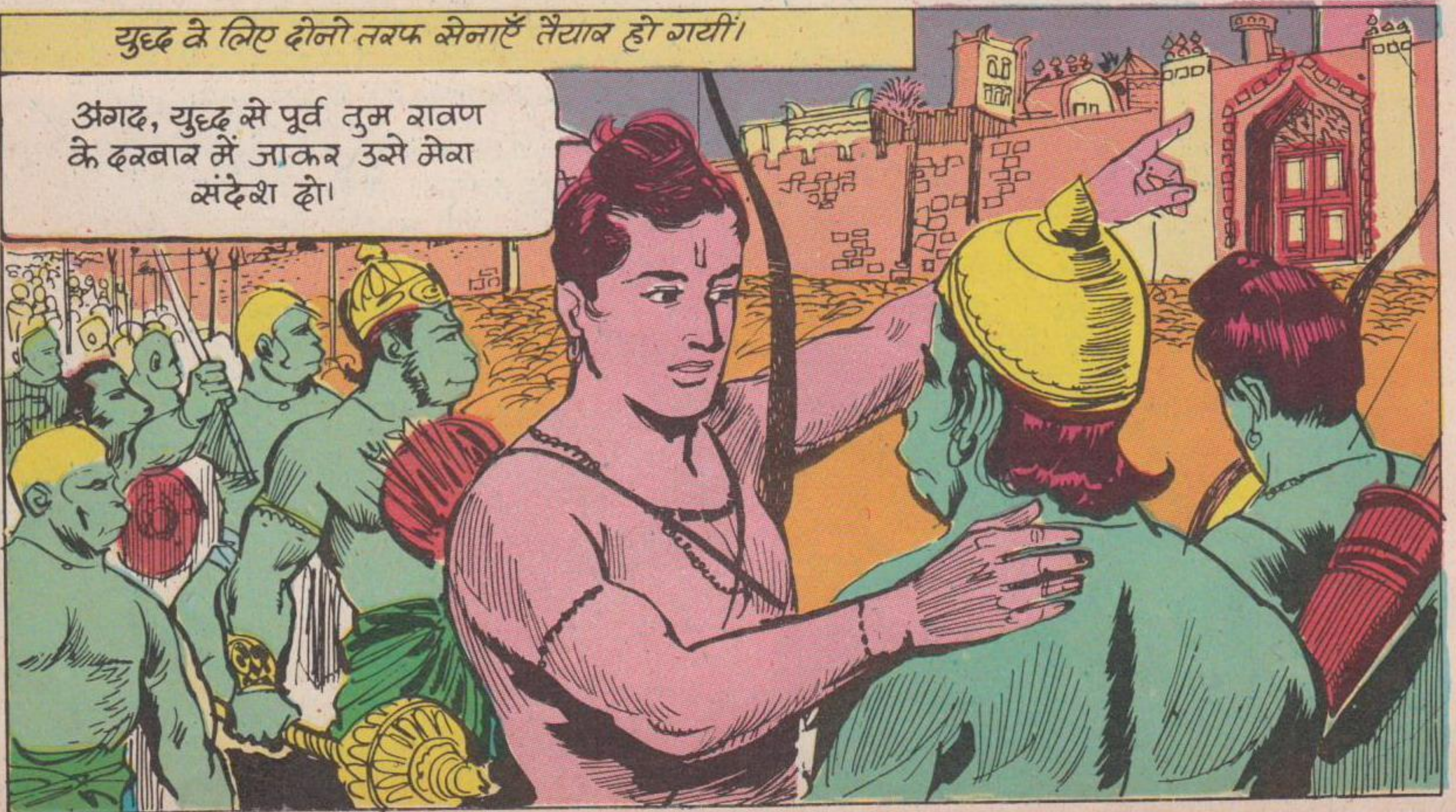


समुद्र पार करने के लिए एक पुल बनाया गया।



युद्ध के लिए दोनों तरफ सेनाएँ तैयार हो गयीं।

अंगद, युद्ध से पूर्व तुम रावण के दरबार में जाकर उसे मेरा संदेश दो।





राजकुमार अंगद दूत बनकर  
रावण के दरबार में पहुँचे।

सीताजी को लौटा दो।  
राम शांति से लौट  
जायेंगे।

जा कर कह दो अपने राम से,  
मैं भुक्ने वाला नहीं। हम युद्ध चाहते  
हैं।

अंगद लौट आये और युद्ध शुरू कर  
दिया गया।

रावण के बेटे  
मेघनाद के  
शक्ति-बाण  
से लक्ष्मण  
अचेत हो कर  
गिर गये।

सुषेण वैद्य ही  
इन्हें अच्छा कर  
सकते हैं...

मैं जाकर  
ले आता  
हूँ उन्हें।

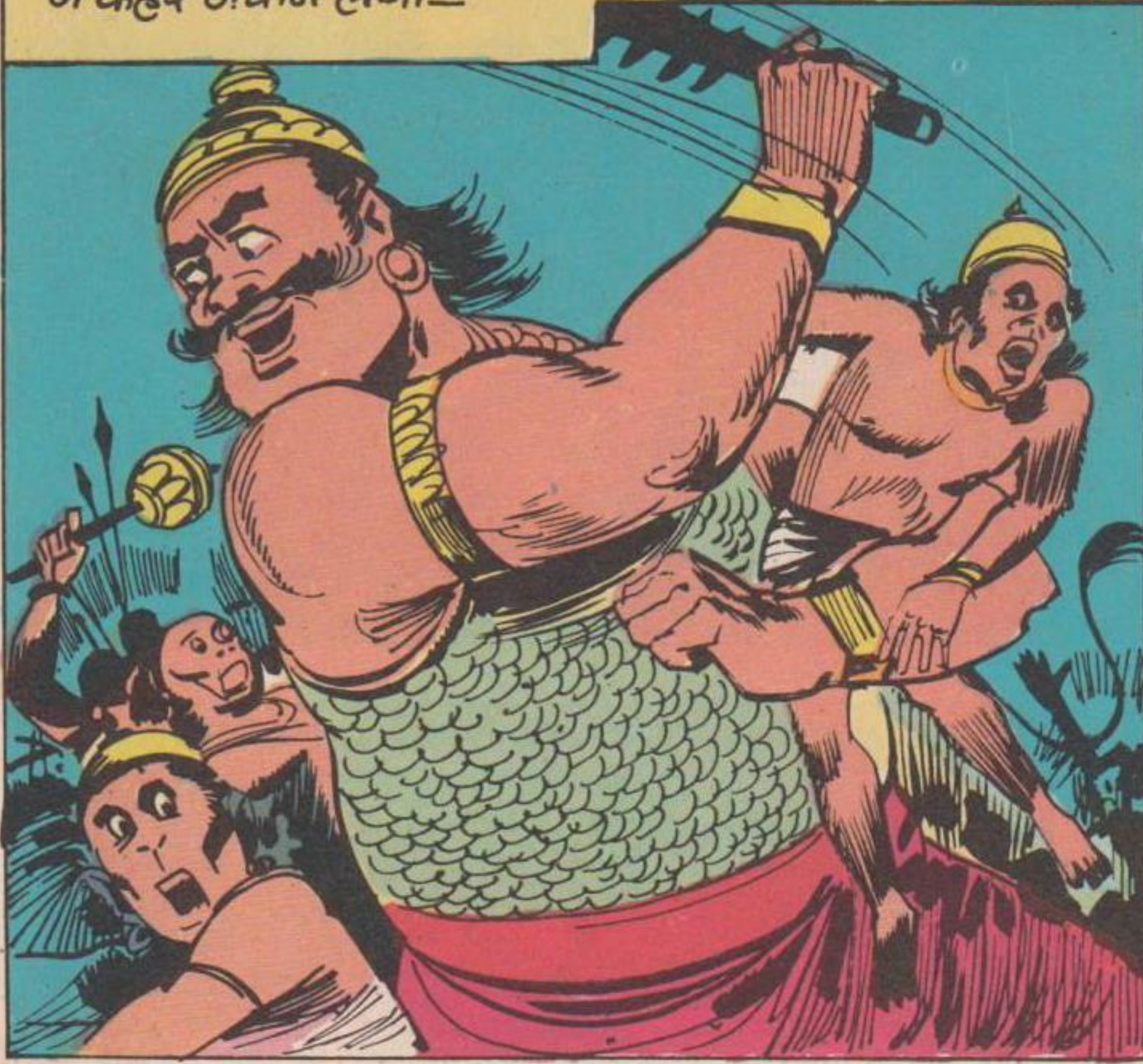
हनुमान सुषेण को उनके घर सहित उठा लाये।



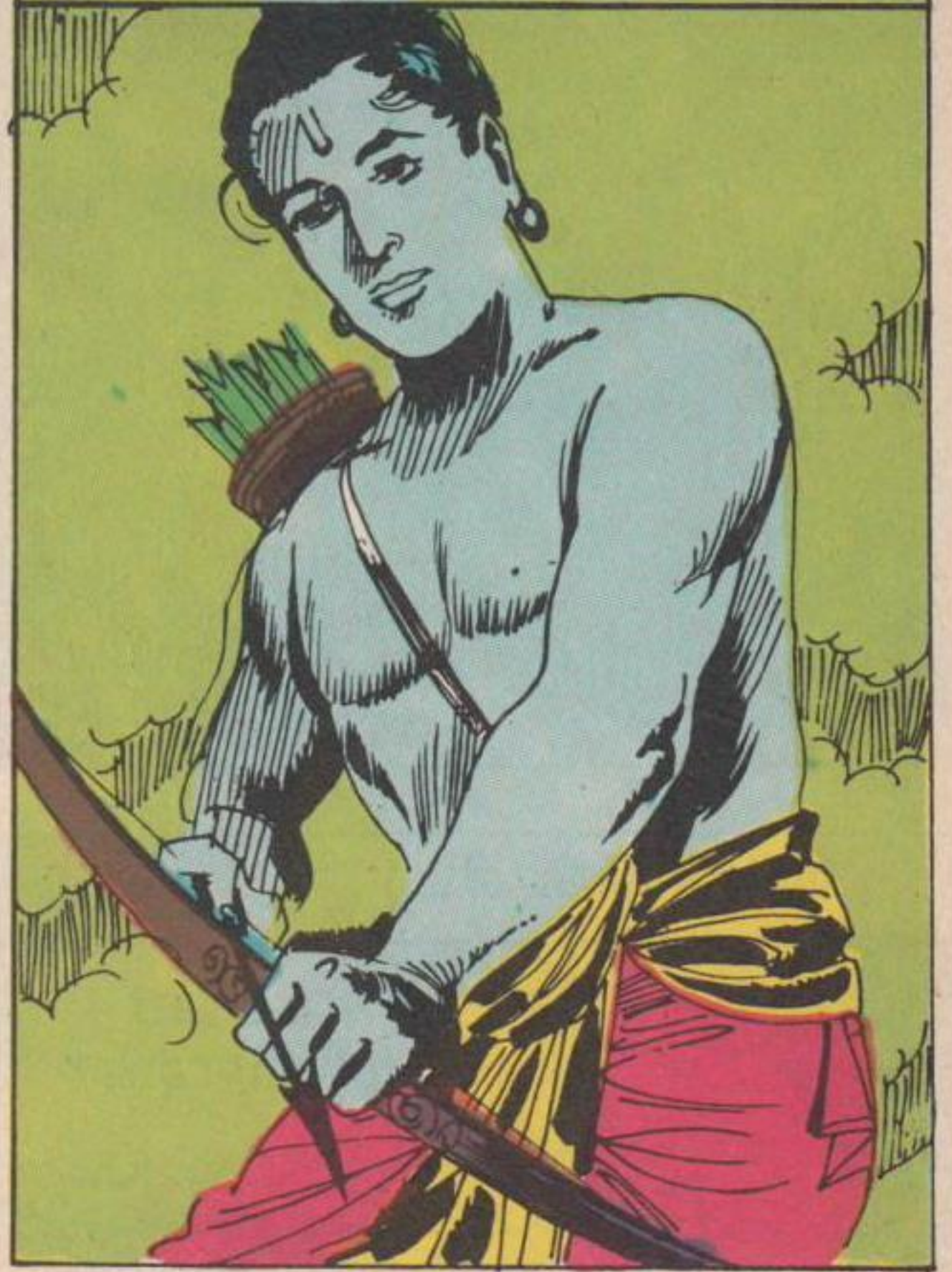




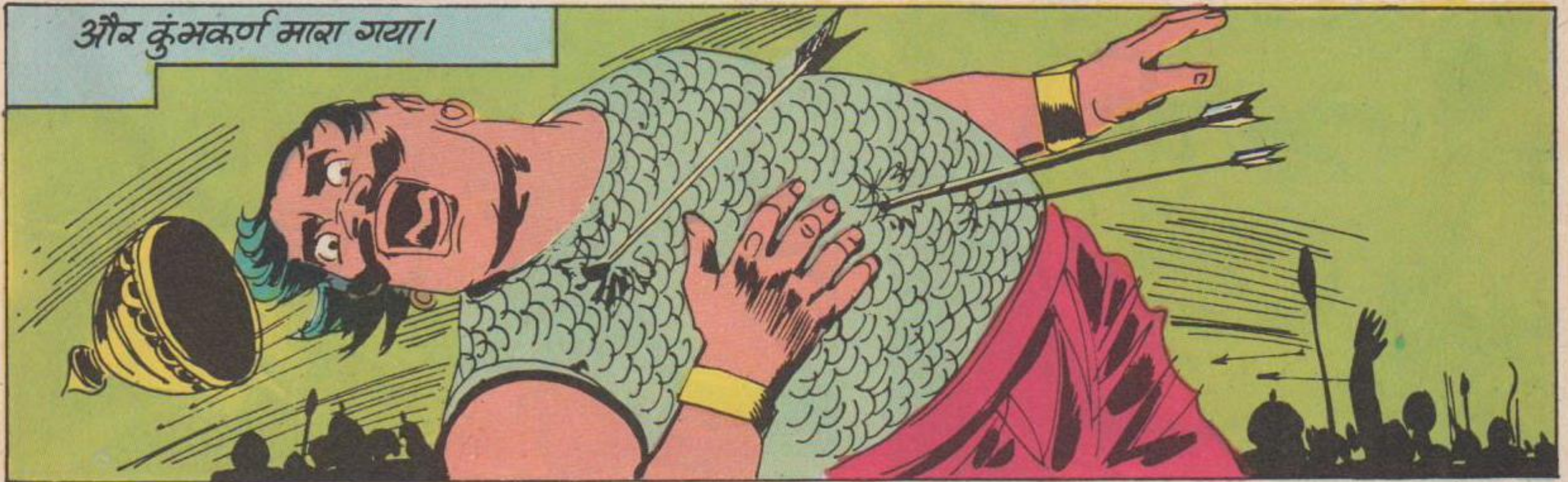
लेकिन अब रावण का भाई कुंभकर्ण वानरसेना में कहर मचाने लगा—



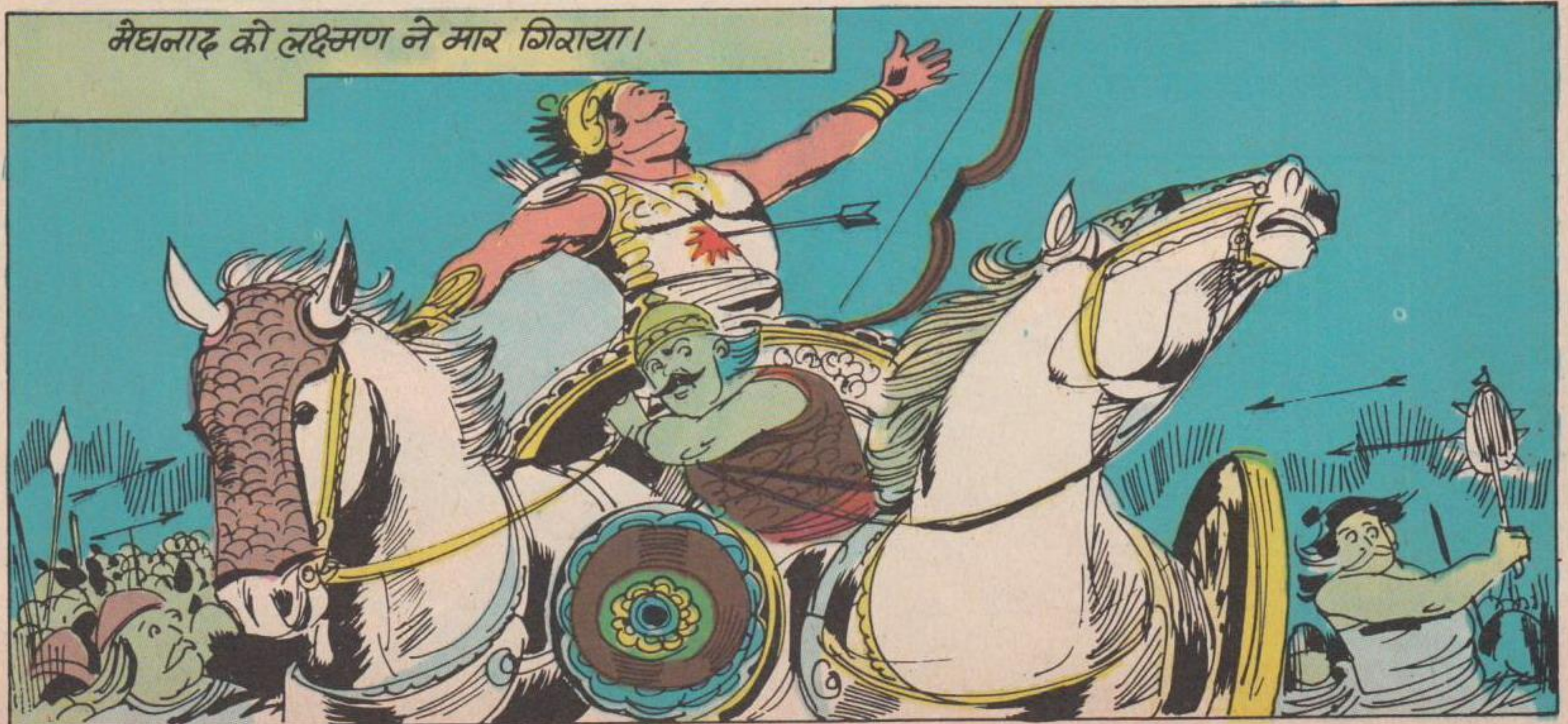
पर राम के सामने उसकी एक न चली।



और कुंभकर्ण मारा गया।



मेघनाद की लक्ष्मण ने मार गिराया।

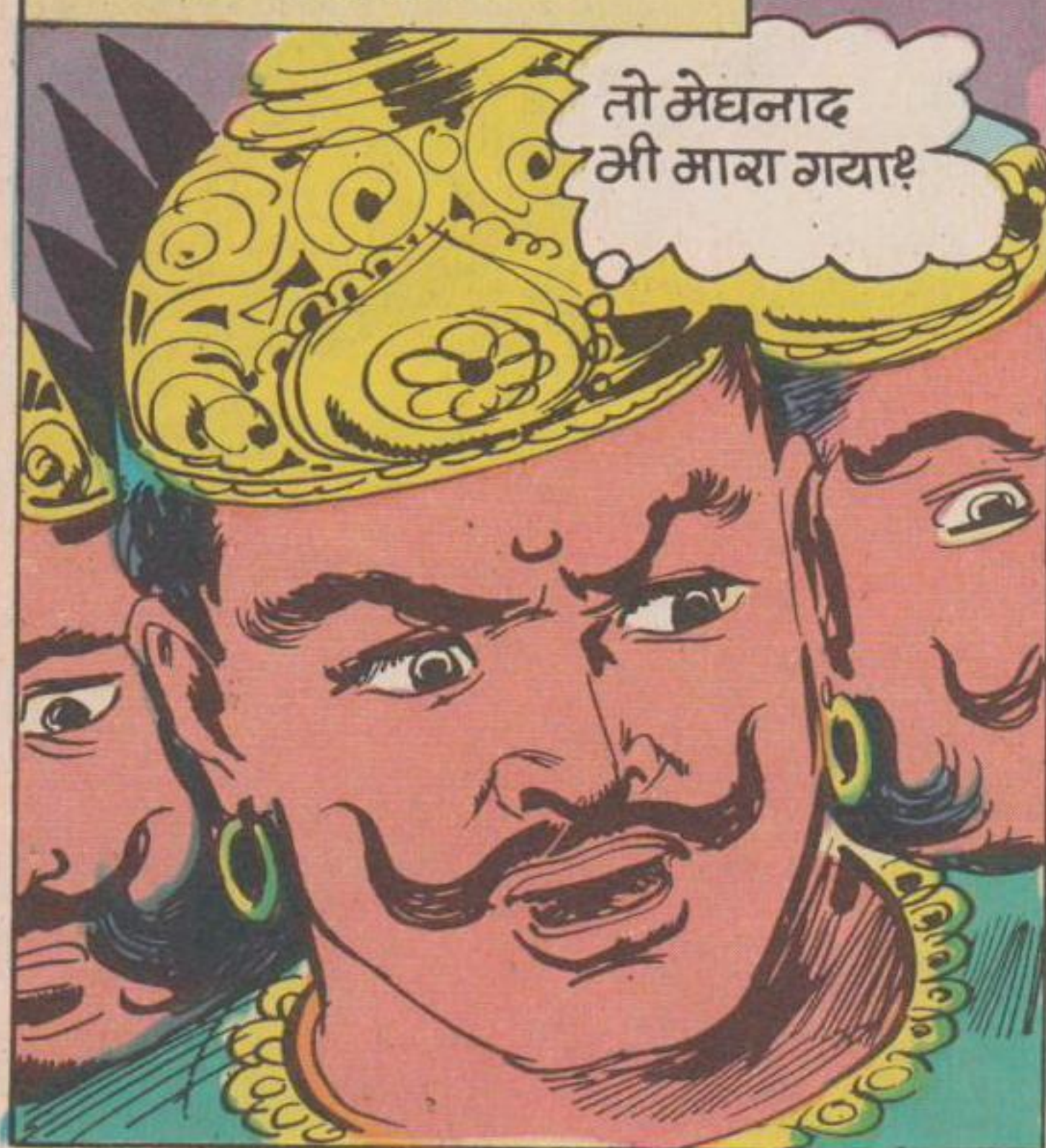




रक्षियों में भगदड़ मच गयी।



रावण के शिविर में—

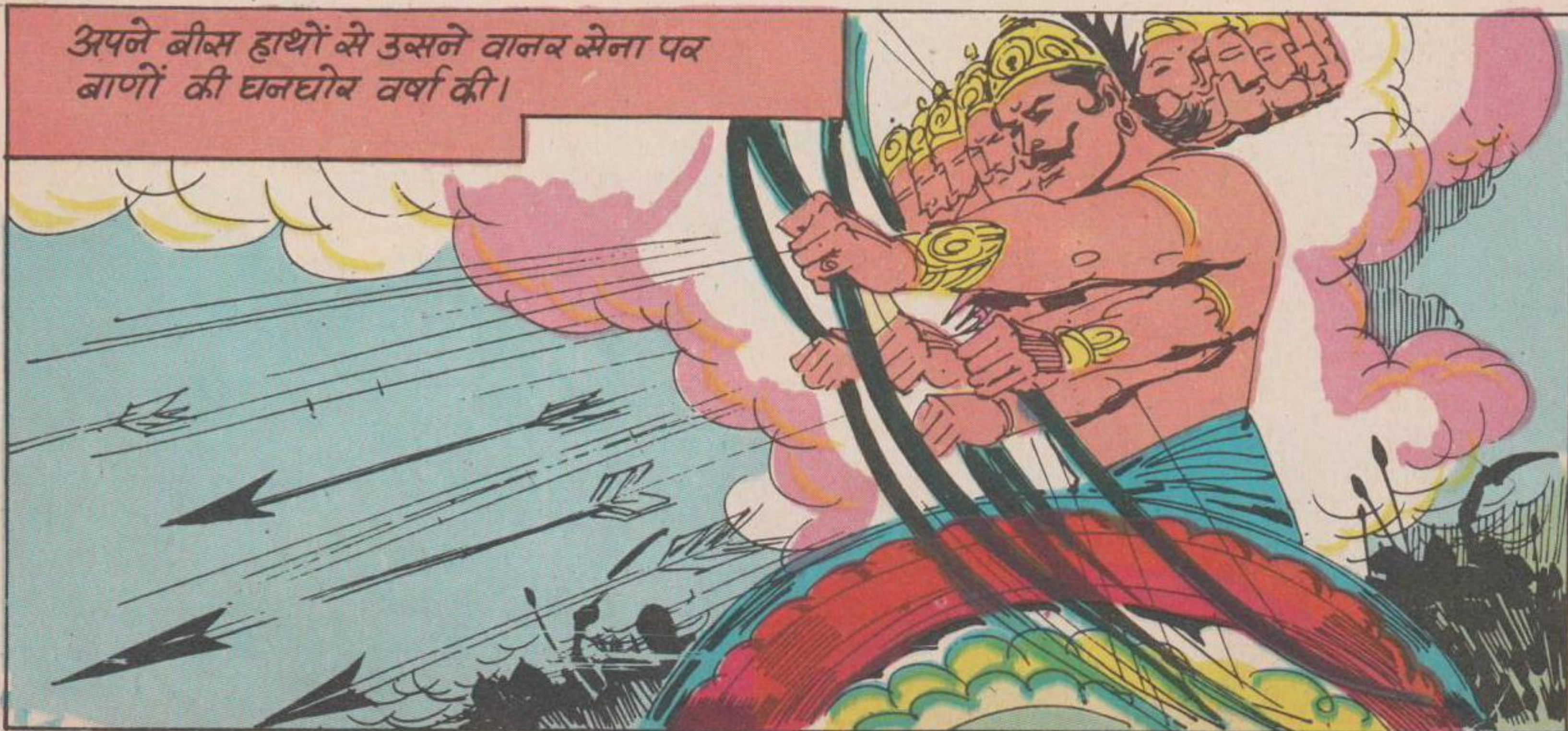


तो मेघनाद भी मारा गया?

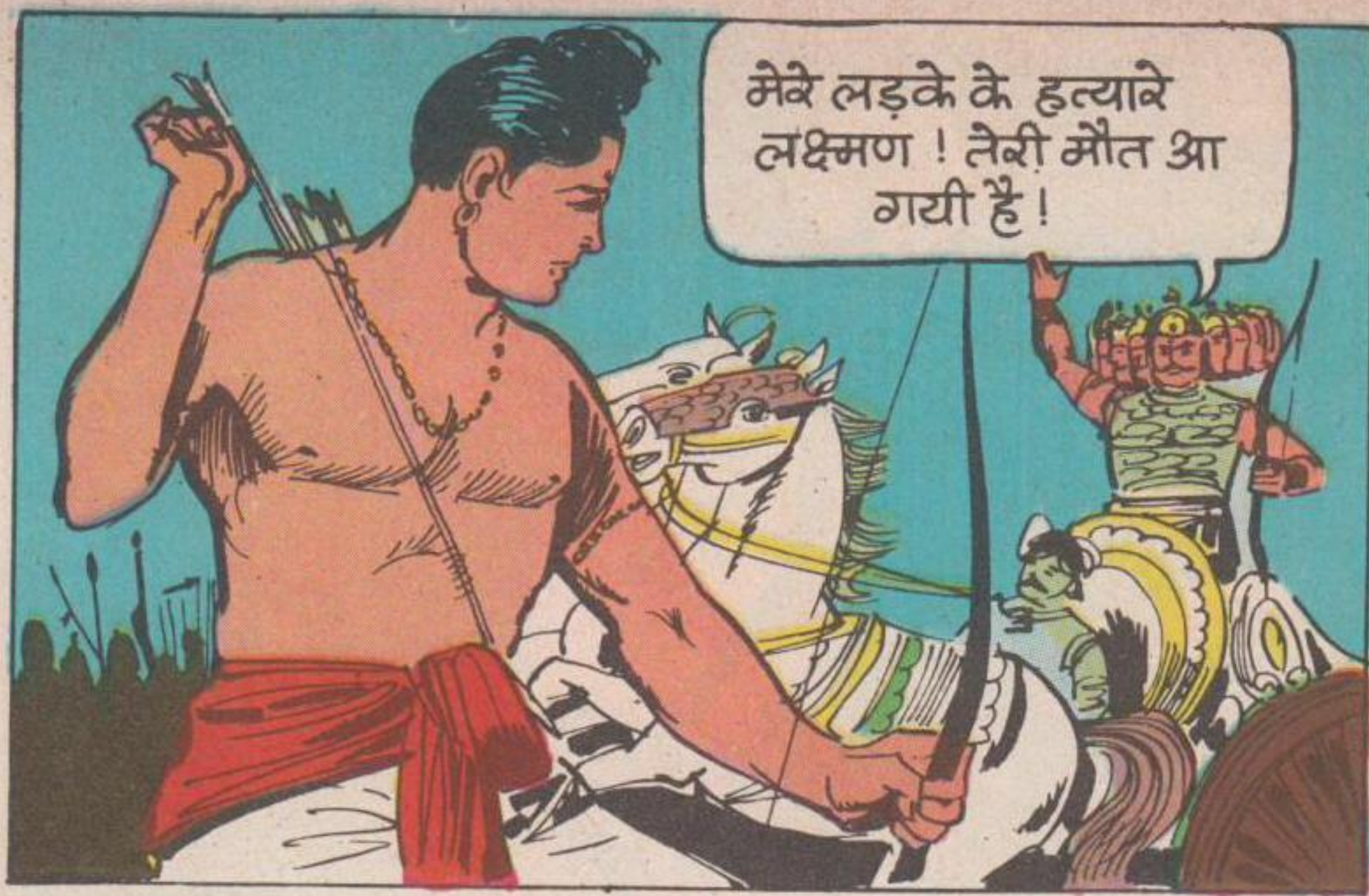
राम को मारने के उद्देश्य से रावण ने घमासान युद्ध किया।



अपने बीस हाथों से उसने वानर सेना पर बाणों की घनघोर वर्षा की।



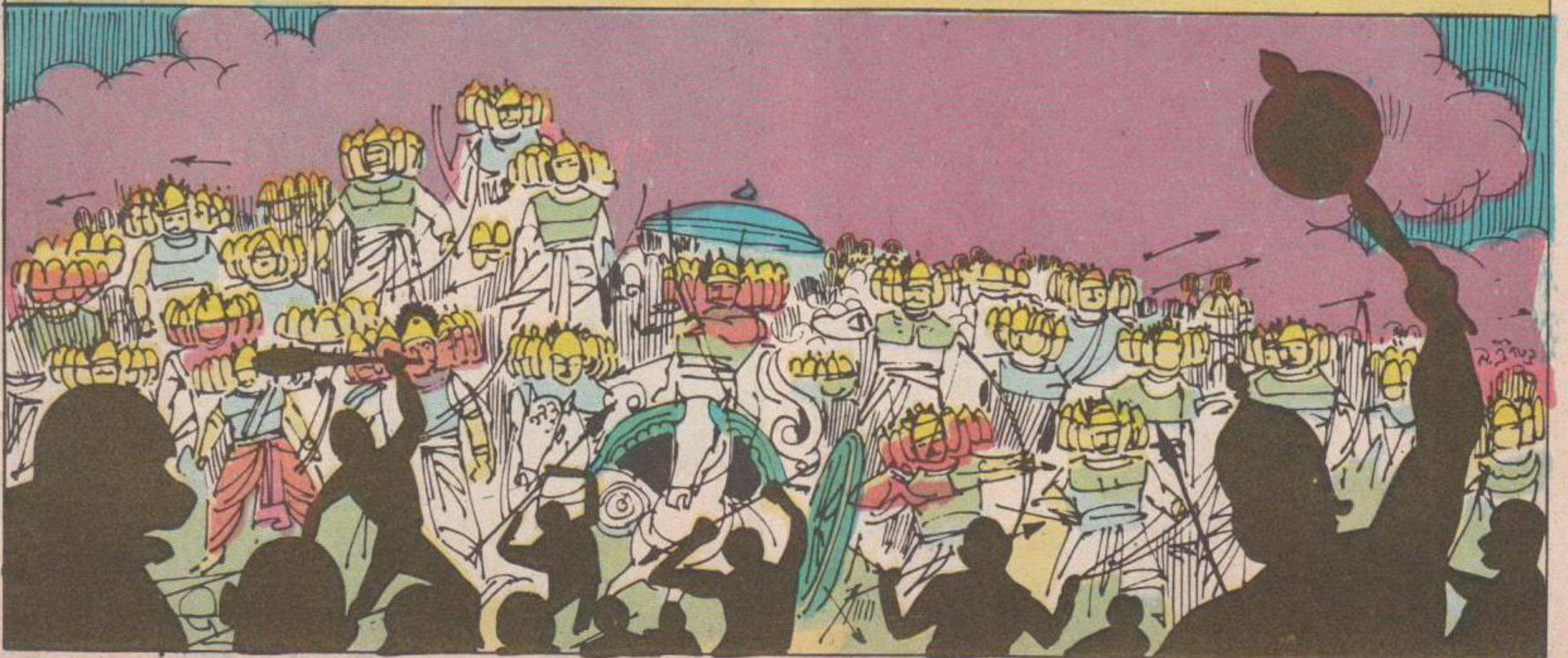




फिर बाम और रावण आमने सामने आये। बाम के पास इंद्र का भेजा हुआ रथ था।



अपनी माया शक्ति से रावण ने अनेक रावण पैदा कर दिये।

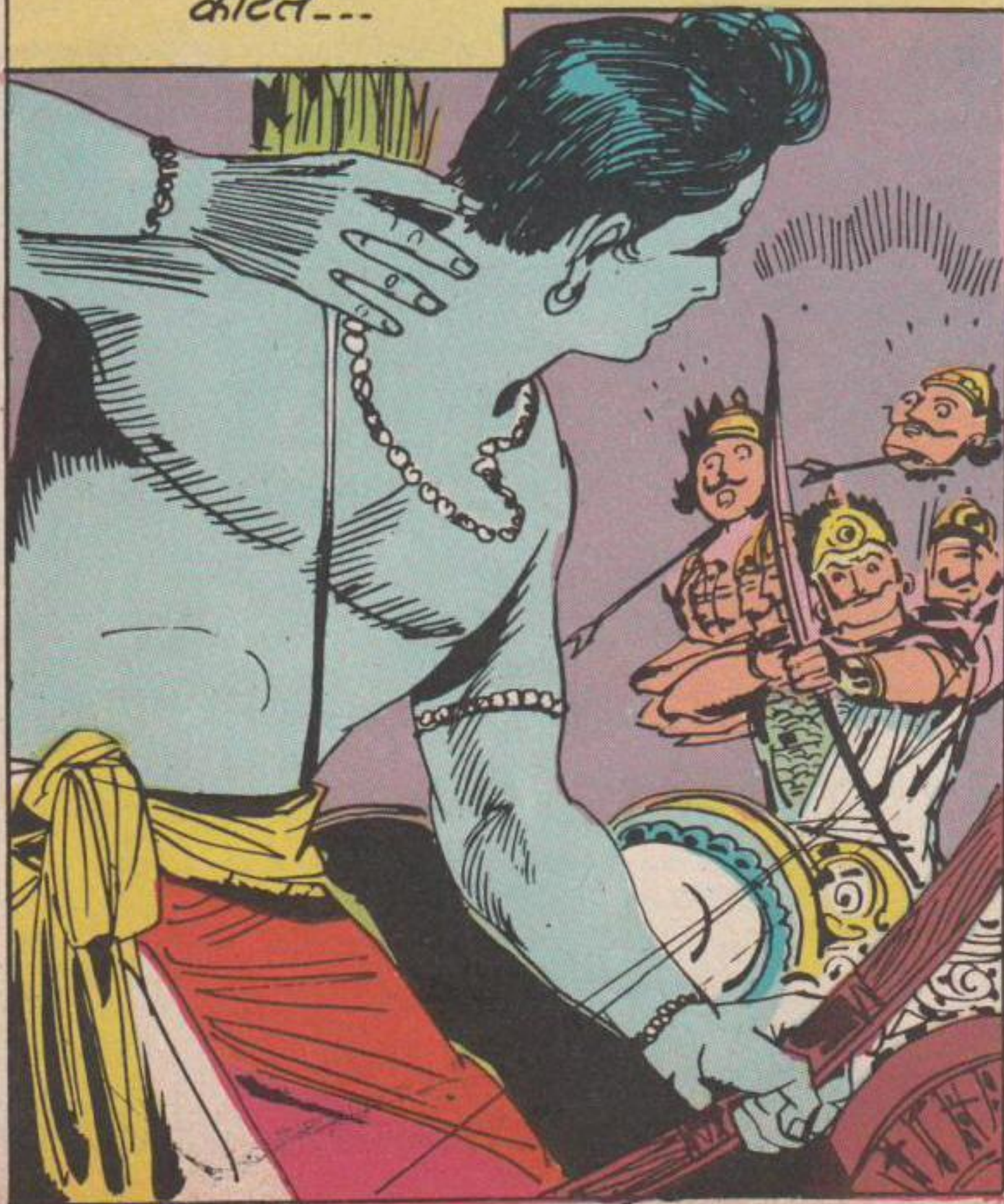




वानर सेना में आतंक छा गया। केवल  
हनुमान वीरतापूर्वक युद्ध  
करते रहे।



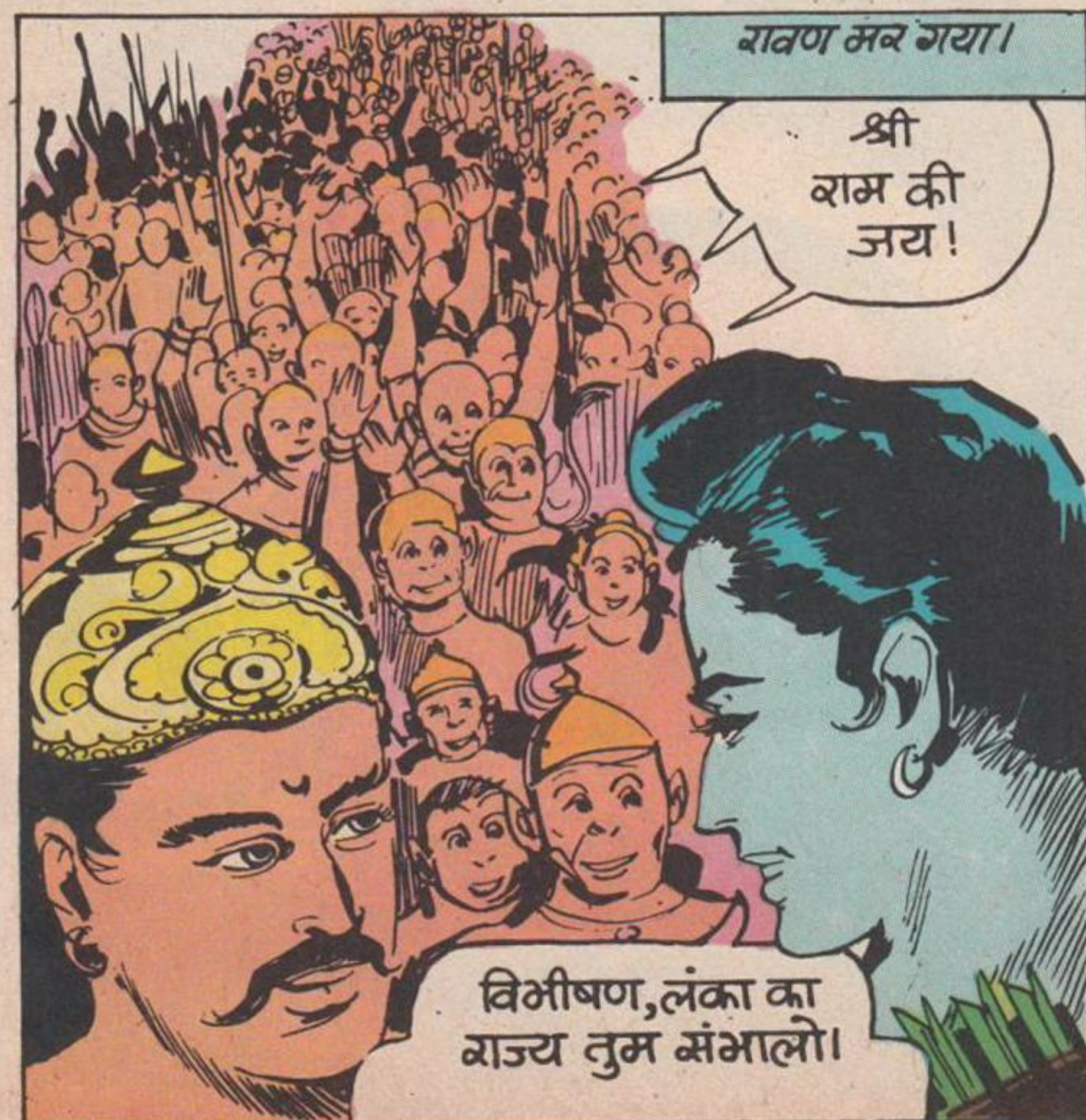
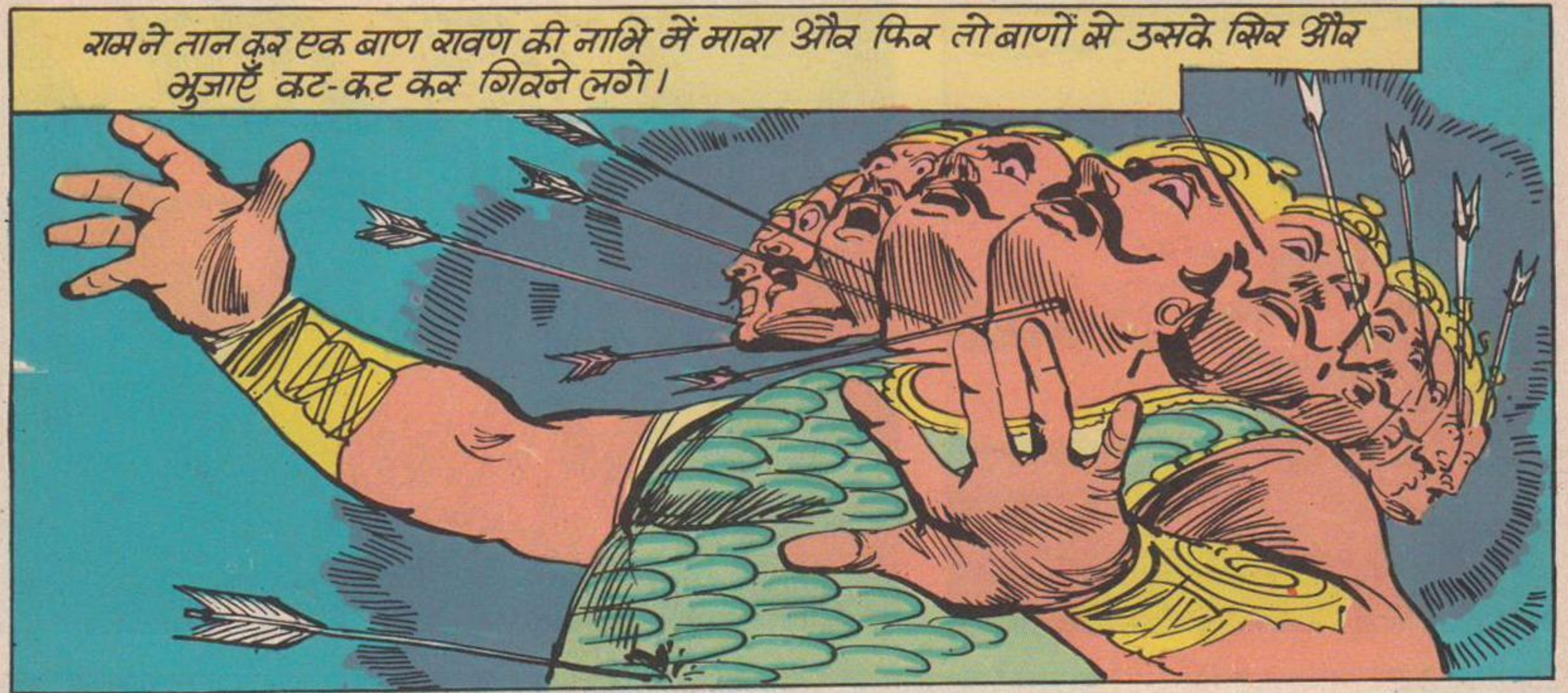
रावण मरता ही न था। राम उसका एक सिंघ  
काटते---



...तो उसके स्थान पर दूसरा पैदा हो जाता।

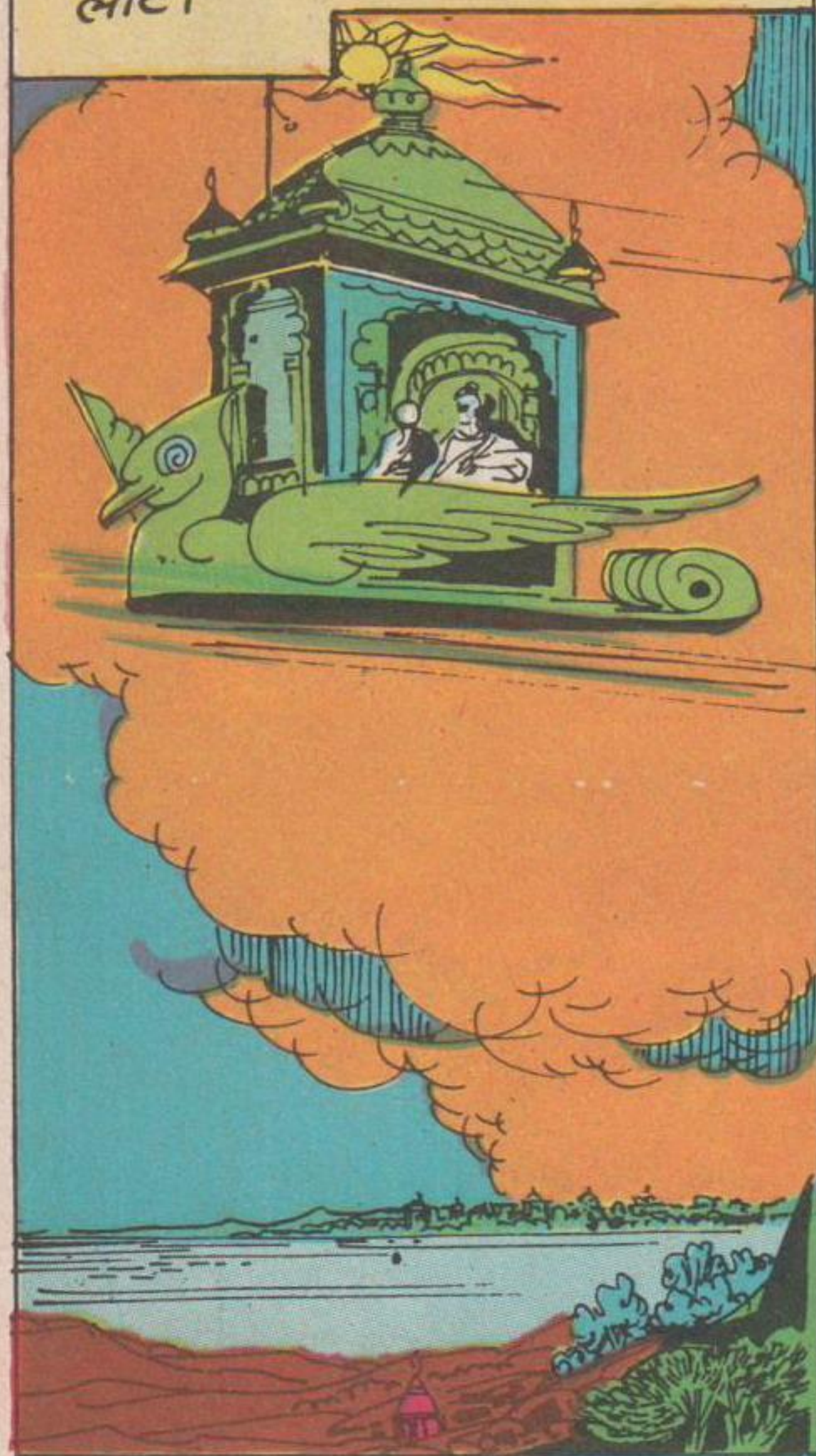








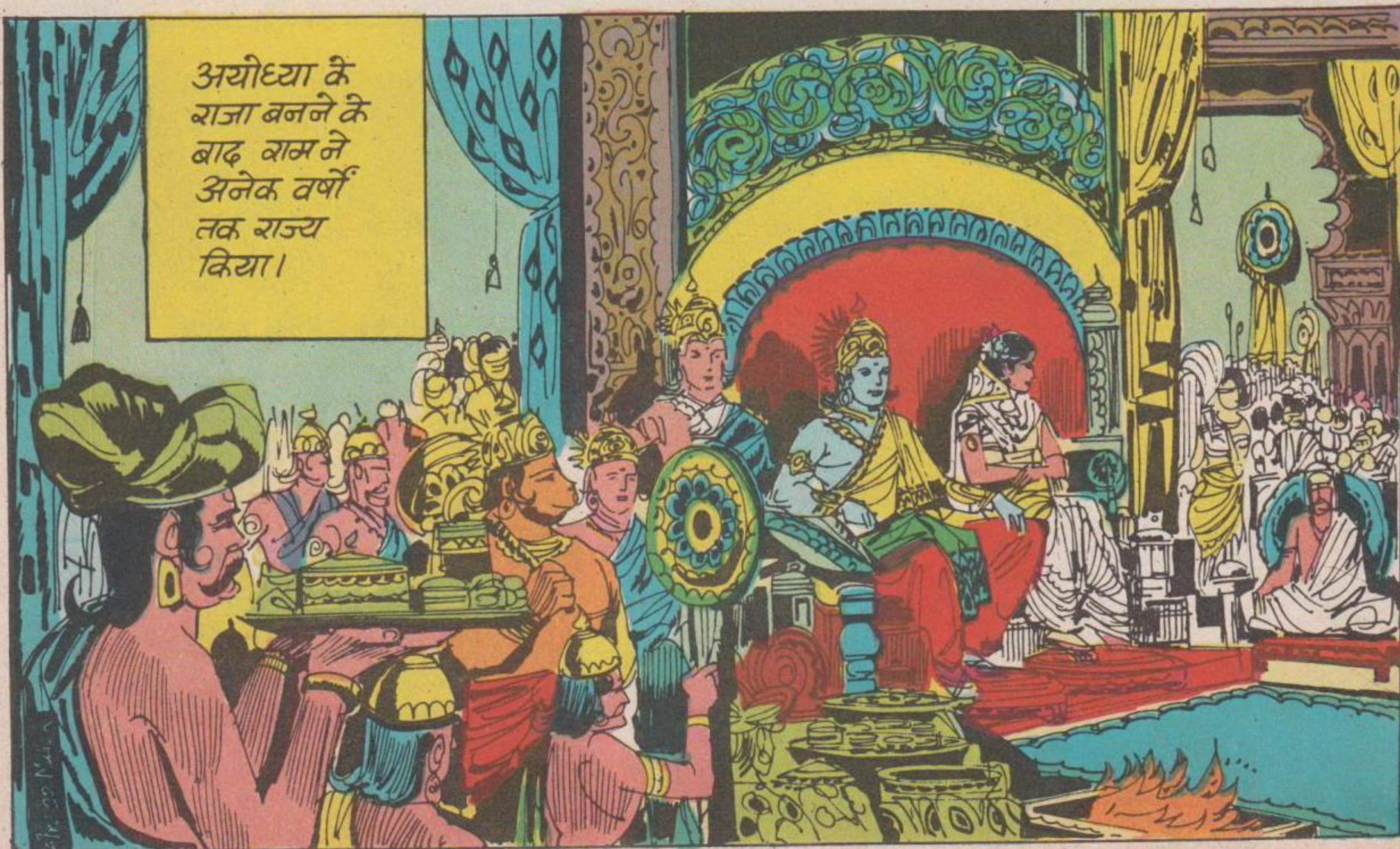
विभीषण के राजतिलक के बाद  
राम पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या  
लौटे।



सीता,  
तुम्हारे  
दुःख के दिन  
समाप्त हुए।



अयोध्या के  
राजा बनने के  
बाद राम ने  
अनेक वर्षों  
तक राज्य  
किया।

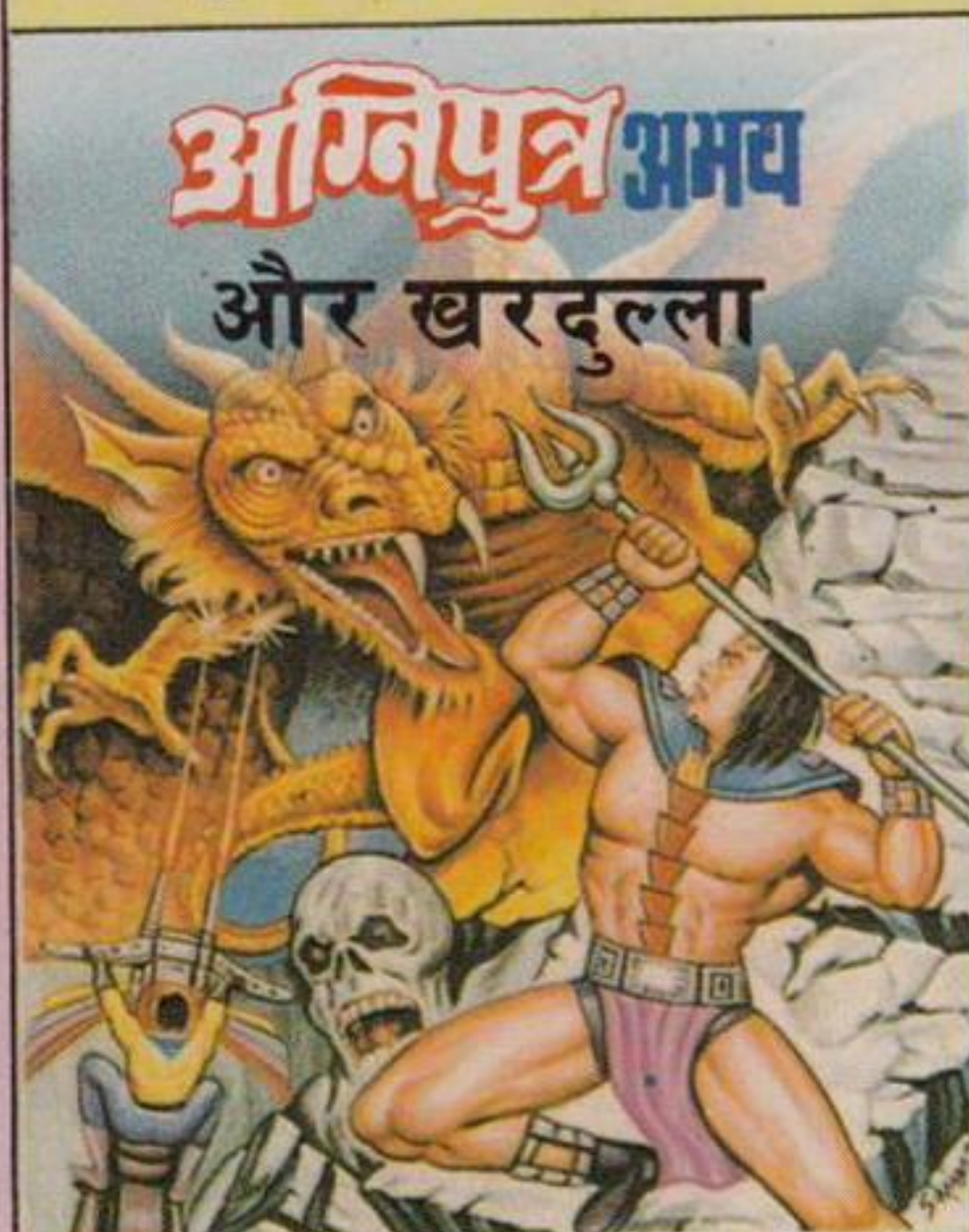




# डायमण्ड कॉमिक्स में

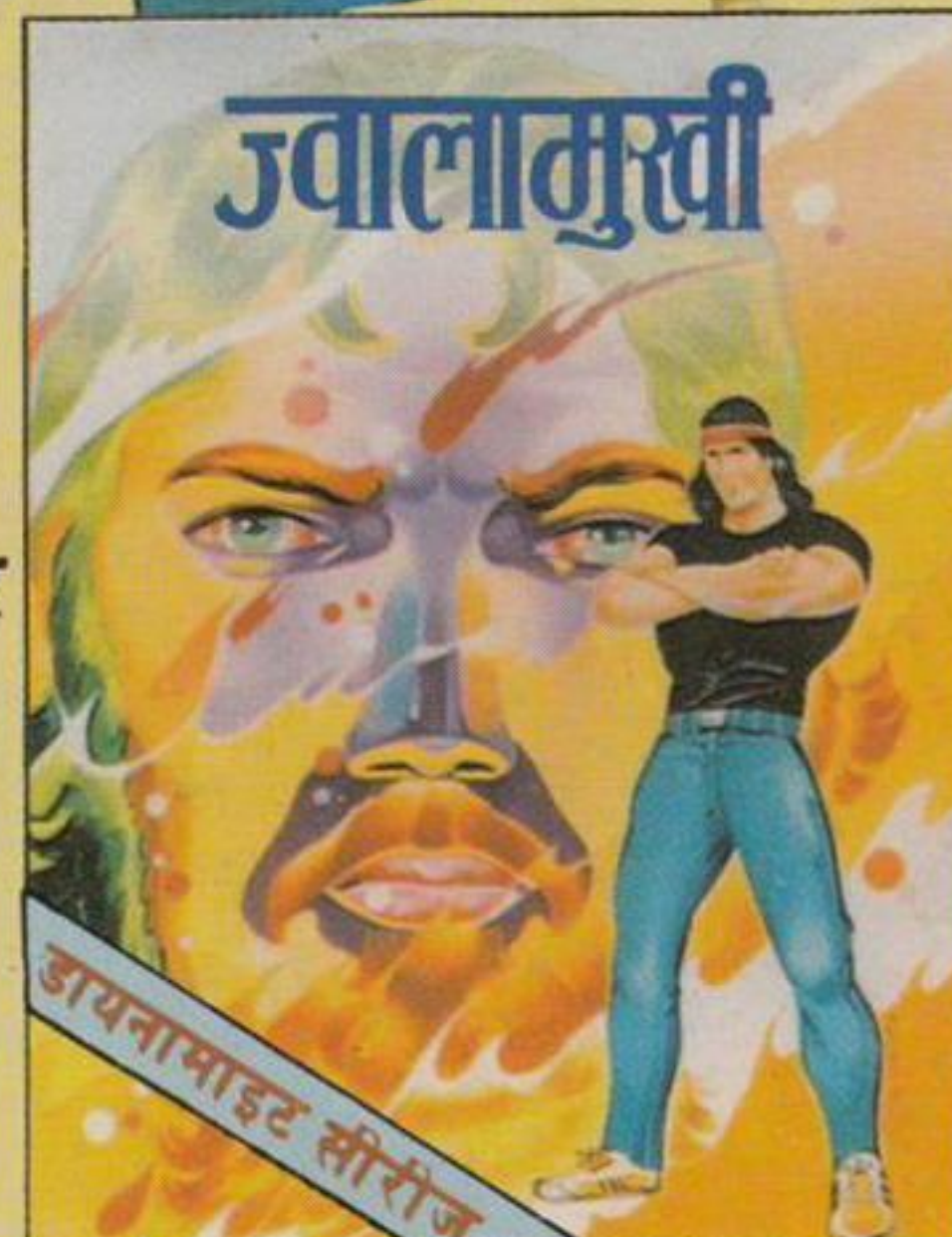
कार्टूनिस्ट प्राण के सदाबहार चरित्र

चाचा चौधरी, साबू, बिल्लू, पिंगी, श्रीमतीजी, रमन, चन्नी चाची  
के नये हंसाने, गुदगुदाने वाले कामिक्स



अग्निपुत्र और  
अभय के  
सनसनीखेज व  
हैरत अंगेज  
कारनामों से भरपूर  
मनोरंजक व  
अत्यन्त रोमांचक  
कॉमिक

अग्निपुत्र अभय  
और खरदुल्ला



ज्वालामुखी  
जो दुनिया को  
दहकते अंगारों पर  
नचाने का 'शैतानी'  
इरादा रखता था।

खलनायक का  
खतरनाक अन्दाज  
'शोले बरसाता,  
आतंक फैलाता,  
विनाश का लावा-  
ज्वालामुखी